-: प्रकाशक :-

वडताल मेनेजींग ट्रस्टी बोर्ड वती

मुख्य कोठारी श्री प.पू. सद्. शास्त्री श्री घनश्यामप्रकाशदासजी स्वामी

श्री स्वामिनारायण मंदिर, संस्थान-वडताल

पीन - ३८७३७५

E-mail : vadtaldhamvikas@gmail.com ❉ Website : www.vadtalmandir.org

शिक्षापत्री (संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी)

ॐ

॥ शिक्षापत्री ॥

(संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी)

-: प्रसिद्ध कर्ता :-

श्री स्वामिनारायण मंदिर, वडतालधाम

श्री हरिकृष्ण महाराज - वडताल

प.पू.ध.धु. १००८ श्री राकेशप्रसादजी महाराजश्री - वडताल

॥ वृत्तालये स भगवान् जयतीह साक्षात् ॥

॥ शिक्षापत्री ॥

(संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी)

श्री लक्ष्मीनारायणदेव पिठाधिपति
प.पू.ध.धू. १००८ आचार्यश्री राकेशप्रसादजी
महाराजश्री की आज्ञासे

: प्रकाशक :

श्री वडताल मेनेजींग ट्रस्टी बोर्ड वती
मुख्य कोठारीश्री प.पू.स.गु. शा.
श्री घनश्यामप्रकाशदासजी स्वामी
वडताल-संस्थान

प्रकाशक :
मुख्य कोठारीश्री स्वामिनारायण मंदिर, वडताल
मु. वडताल, ता. नडीयाद, जी. खेडा.
फोन : (०२६८) २५८९७२८, २५८९७७६
E-mail : vadtaldhamvikas@gmail.com
Web : www.vadtalmandir.org
प्रकाशन तिथि : सं. २०७४, कार्तिकी समैयो
आवृत्ति : चतुर्थ
प्रत : ५०००
मूल्य : २०/-
मुद्रक :
श्रीजी आर्ट, अमदावाद.
फोन नं. (०७९) ४००८६६८६
(मो.) ९८७९६०६६८६
E-mail : shreejiartjanral@gmail.com
shreejiart@gmail.com

॥ वृत्तालये स भगवान् जयतीह साक्षात् ॥

प्रकाशकीयम्

''मद्रूपमिति मद्वाणी मान्येयं परमादरात्'' वचनानुसार यह ग्रंथ श्रीस्वामिनारायण भगवान का वाङ्मय स्वरूप है। जैसे जैसे भगवद्भक्ति से निजान्तःकरण निर्मल होता है, वैसे वैसे शिक्षापत्री में साक्षात् भगवद्दर्शन होता है, यह आध्यात्मिक उपलब्धि की बात है।

आजकल हम प्रगति की दौड में उर्ध्वगति बजाय अधोगति कि तरफ जा रहै है। सामाजिक-पारिवारीक एवं डीप्रेशन जैसी आंतरिक समस्याग्रस्त हो रहे है। आज के रुग्ण समाज के लिए यह ''शिक्षापत्री'' संजीवनी समान लाभप्रद है। साक्षर-निरक्षर; स्त्री-पुरुष - ज्ञानी-अज्ञानी; सबको उर्ध्वगति का पथ प्रदर्शित करनेवाली यह ''शिक्षापत्री'' की लक्षाधिक प्रत प्रकाशित हुई है।

आज वडताल मंदिर में देश-विदेश से आनेवाले यात्रीओं कि याचना स्वीकार करके संस्कृत, हिन्दी एवं

अंग्रेजी भाषा में प्रकाशन कार्य हो रहा है । वडताल श्रीलक्ष्मीनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धू. १००८ आचार्यश्री राकेशप्रसादजी महाराज, मुख्यकोठारी प.पू. सद्‌गुरु शास्त्री श्रीघनश्यामप्रकाशदासजी स्वामी एवं चेरमेनश्री प.पू. श्री देवप्रकाशदासजी स्वामी जैसे वरिष्ठ पुरुषो के आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए हिन्दी अंग्रेजी अनुवाद में स्वामी पूर्णवल्लभदासजी तथा योगेशभाई सी. पटेल – शिकागो, पार्षदश्री ऋषि भगतने टीम वर्क किया है।

इस प्रकाशन में श्रेष्ठत्व तत्त्व उनका परिश्रम है । कोई क्षति द्रष्टिगत हो तो मेरी गलति है। ''गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येय प्रमादतः'' इस न्याय से क्षमायाचना के साथ...

शास्त्री सन्तवल्लभदास (Ph.D)
आ.को. वडताल मंदिर का
जयश्री स्वामिनारायण

PREFACE

A life that has been lived with productive, meaningful and fruitful behaviouris worthy of recognition. Such life gives oneself and people around him/her a constant feeling of contentment in all circumstances. There are many forms of living entities – birds, animals, bacteria, viruses, trees, plants, etc.

Yet, not all living entities are equal. What makes human standout is their instinctand efforts for spiritual advancement.

For facilitate spiritual advancement, Lord Swāminārāyan has provided a roadmap to His followers in the form of SHIKSHĀPATRI. The SHIKSHĀPATRI is a concise and precise divine commandments derived from many scriptures. This tiny sacred scripture is a life

changing formula. By practicing SHIKSHĀPATRI, one may achieve peace in material life and spiritual bliss simultaneously.

The SHIKSHĀPATRI is central to religious practices for the followers of Swaminarayan Sampraday. Therefore, with the blessings of H.D.H. 1008 Āchārya Shri Rākeshprasādji Mahārāj, the head of Laxminārāyandev Gādi, Vadtāl and Shāstri Shri Ghanshyāmprakāshdāsji swāmi, Kothāri shri vadtal and Pujya Shri Devprakashdasji Swami- Chairman Shri, this publication of SHIKSHĀPATRI has been accomplished. We would also like to acknowledge the unyielding effort of Pu. Purnavallabhdāsji swami in translation of this SHIKSHĀPATRI. Please accept our apologies for any unintended errors in this SHIKSHĀPATRI.

Parshad Shri Rushi bhagat
Yogeshbhāi C. Patel (Chicago)

ॐ

॥ शिक्षापत्री ॥

वामे यस्य स्थिता राधा श्रीश्च यस्यास्ति वक्षसि ।
वृन्दावनविहारं तं श्रीकृष्णं हृदि चिन्तये ॥१॥

जिनके बाँये भाग में श्री राधाजी तथा जिनके वक्षः स्थल में श्रीलक्ष्मीजी बिराजमान हैं और जो वृंदावन विहारी हैं ऐसे श्रीकृष्ण भगवान का मैं अपने हृदय में ध्यान करता हूँ ॥१॥

I meditate in My heart upon Lord Shri Krishna on whose left resides Rādhā and in whose heart, resides Lakshmi, and who performs *leelā* (divine activities or pastimes) in Vrindāvan. (as an auspicious beginning before writing this Shikshāpatri.) ||1||

लिखामि सहजानन्दस्वामी सर्वान्निजाश्रितान् ।
नानादेशस्थितान् शिक्षापत्रीं वृत्तालयस्थितः ॥२॥

वृत्तालय गाँव मे निवास करनेवाले हम सहजानन्द स्वामी, विभिन्न देशो में रहनेवाले हमारे आश्रित सभी सत्संगियों के प्रति शिक्षापत्री लिखते हैं ॥२॥

I, Sahajānand Swāmi, while residing in Vadtāl, write this SHIKSHĀPATRI for all My devotees residing in different lands. ||2||

भ्रात्रो रामप्रतापेच्छारामयोर्धर्मजन्मनोः ।
यावयोध्याप्रसादाख्यरघुवीराभिधौ सुतौ ॥३॥
मुकुन्दानन्दमुख्याश्च नैष्ठिका ब्रह्मचारिणः ।
गृहस्थाश्च मयारामभट्टाद्या ये मदाश्रयाः ॥४॥
सधवा विधवा योषा याश्च मच्छिष्यतां गताः ।
मुक्तानन्दादयो ये स्युः साधवश्चाखिला अपि ॥५॥

श्रीधर्मदेव से जिनका जन्म हुआ ऐसे हमारे भाइ रामप्रतापजी और इच्छारामजी उनके पुत्र अयोध्याप्रसादजी तथा रघुवीरजी (जिन्हे हमने अपने दत्तक पुत्र मानकर सभी सत्संगिजनो के आचार्य पद पर स्थापित किये है) ॥३॥

तथा हमारे आश्रित मुकुन्दानन्द इत्यादि नैष्ठिक ब्रह्मचारी गण और मयाराम भट्ट इत्यादि गृहस्थ सत्संगी ॥४॥

तथा हमारे शिष्यत्व को प्राप्त सौभाग्यवती तथा विधवा स्त्रियाँ और मुक्तानन्द आदि सब साधुगण ।।५।।

Rāmpratāpji and Ichhārāmji, born of Shree Dharma Dev, are my brothers. Their sons' names are Shri Ayodhyāprasād and Shri Raghuvir (whom I have adopted as My sons and established them as the *Āchâryās* (Heads) of My disciples). ||3||

The *naishtik brahmachāris* (lifelong *brāhmin* celibates) headed by Mukundānand, and the devoted househholders (*grahasthas*) such as Mayārām Bhatt, and all others; ||4||

And My followers, all married women and widows, Muktānand and all other *sādhus*, ||5||

स्वधर्मरक्षिका मे तैः सर्वैर्वाच्याः सदाशिषः ।
श्रीमन्नारायणस्मृत्या सहिताः शास्त्रसम्मताः ।।६।।

वे सभी श्रीमन्नारायण के स्मरणपूर्वक, शास्त्र सम्मत तथा स्वधर्म का रक्षण करनेवाले हमारे शुभ आशीर्वाद स्वीकारें ।।६।।

May they all accept My divine blessings bestowed to protect their dharma, which are in remembrance of Lord Shreeman Narāyana and in accordance with the *shāstra* (scriptures). ||6||

एकाग्रेणैव मनसा पत्रीलेखः सहेतुकः ।
अवधार्यो ऽयमखिलैः सर्वजीवहितावहः ।।७।।

यह शिक्षापत्री लिखने का जो उद्देश है उसको सब एकाग्र मन से धारण करें । यह शिक्षापत्री जो हमने लिखी है वह सर्व जीवो का हित करनेवाली है ।।७।।

All of the above should ponder on the benevolent purpose of writing this SHIKSHĀPATRI with a focused mind. This SHIKSHĀPATRI written by Me is for the spiritual welfare of every soul. ||7||

ये पालयन्ति मनुजाः सच्छास्त्रप्रतिपादितान् ।
सदाचारान् सदा तेऽत्र परत्र च महासुखाः ॥८॥
तानुल्लङ्घ्यात्र वर्तन्ते ये तु स्वैरं कुबुद्धयः ।
त इहामुत्र च महल्लभन्ते कष्टमेव हि ॥९॥

श्रीमद् भागवत पुराण आदि सत् शास्त्रों में प्रतिपादित अहिंसा आदि सदाचार का पालन जो मनुष्य करते हैं वे इस लोक तथा परलोक में महा सुख प्राप्त करते हैं, परंतु जो लोग उन सदाचारों का उल्लंघन करके इस जगत में अपनी इच्छानुसार जीवन व्यतित करते हैं वे दुष्टबुद्धि वाले हैं और इस लोक तथा परलोक में निश्चित ही बड़ा कष्ट पाते हैं ॥८-९॥

All those who observe the code of good conduct like non-violence etc. prescribed by the *sat-shāstras* such as Shreemad Bhāgwat, shall attain happiness in this world as well as the world beyond. ||8||

Those who willfully disobey the code of good conduct and act according to their own whims, are evil-minded and shall suffer great

distress in this world as well as in the world beyond. ||9||

अतो भवद्भिर्मच्छिष्यैः सावधानतयाऽखिलैः ।
प्रीत्यैतामनुसृत्यैव वर्तितव्यं निरन्तरम् ।।१०।।

इसलिए आप सभी मेरे शिष्यों, सावधानी पूर्वक प्रेम से शिक्षापत्री के अनुसार ही हमेशा वर्ताव करें, परंतु कदापि उल्लंघन करके वर्ताव न करें ।।१०।।

Hence, all My followers should lovingly and vigilantly always follow the commandments of this SHIKSHĀPATRI (but should never contradict the SHIKSHĀPATRI in their actions) ||10||

सामान्यधर्माः

कस्यापि प्राणिनो हिंसा नैव कार्याऽत्र मामकैः ।
सूक्ष्मयूकामत्कुणादेरपि बुद्धया कदाचन ।।११।।

सभी आश्रितवर्गके लीए सामान्य धर्म

अब वह वर्तावकी रीति कहते हैं, मेरे आश्रितजन कभी भी, किसी प्राणी की हिंसा न करें और जानबूझकर भी सूक्ष्म जू, खटमल, चांचड आदि जीवों की हिंसा तो कभी भी न करें ॥११॥

Common rules For All Followers

Now, I am stating the code of good conducts, My devotees shall never intentionally kill or harm any living being, not even small insects such as lice or bugs. ||11||

देवतापितृयागार्थमप्यजादेश्च हिंसनम् ।
न कर्तव्यमहिंसैव धर्मः प्रोक्तोऽस्ति यन्महान् ॥१२॥

देवयज्ञ तथा पितृयज्ञ के निमित्त भी बकरा हिरन, खरगोश, मछली आदि की हिंसा न करें, क्योंकि अहिंसा को ही शास्त्रों में महान धर्म कहा गया है ॥१२॥

My devotees shall never kill goats, dears, rabbits, fishes or other living beings even in

yagnas (sacrifices) performed for deities and ancestors, for *ahimsā* (non-violence) is declared by the *shāstras* as the highest dharma. ||12||

स्त्रिया धनस्य वा प्राप्त्यै साम्राज्यस्य च वा क्वचित् ।
मनुष्यस्य तु कस्यापि हिंसा कार्या न सर्वथा ॥१३॥

स्त्री, धन तथा राज्य की प्राप्ति के लिए भी मनुष्य की हिंसा किसी भी तरह से कभी भी न करें ॥१३॥

One shall never use violence or kill another human being by any means, not even to acquire women, wealth, political power or sovereignty. ||13||

आत्मघातस्तु तीर्थेऽपि न कर्तव्यश्च न क्रुधा ।
अयोग्याचरणात् क्वापि न विषोद्बन्धनादिना ॥१४॥

आत्महत्या तीर्थ स्थानो में भी न करें, क्रोध में आकर या कहीं अयोग्य आचरण हो जाए तो उससे डरकर भी आत्महत्या न करें, जहर खाकर, गले फाँसी लगाकर, कूएँ में गिरकर, पर्वत के उपर से कूद कर इत्यादि किसी भी प्रकार सें आत्महत्या कभी भी न करें ॥१४॥

One shall never commit suicide, even in a place of pilgrimage, due to anger, repentance of a sinful deed, or extreme sorrow, either by taking poison, by strangulation, by jumping into a well, by jumping from a mountain, or by any other means. ||14||

न भक्ष्यं सर्वथा मांसं यज्ञशिष्टमपि क्वचित् ।
न पेयं च सुरामद्यमपि देवनिवेदितम् ॥१५॥

यज्ञ के शेषरूप माँस हो तो भी उसका भक्षण आपत्कालमें भी न करें तथा देव को निवेदित किया हुआ मद्य (सुरा–दारु) का भी पान न करें ॥१५॥

One shall never eat meat, not even remnants of an offering from a sacrifice. One shall never drink liquor, alcohol or any kind of intoxicating drinks, even though they may be an offering to a deity. ||15||

अकार्याचरणे क्वापि जाते स्वस्य परस्य वा ।
अङ्गच्छेदो न कर्तव्यः शस्त्राद्यैश्च क्रुधापि वा ॥१६॥

कभी भी अपने से या दूसरे से अयोग्य आचरण हो गया हो तो अपना तथा दूसरे का अंगछेदन शस्त्रादि से न करें अथवा क्रोधमें आकर भी अपने अंगका तथा दुसरेके अंगका छेदन न करें ॥१६॥

One shall never cut or mutilate one's own or another's body parts with a weapon in order to punish oneself or others for misdeeds, even in a state of anger. ||16||

स्तेनकर्म न कर्तव्यं धर्मार्थमपि केनचित् ।
सस्वामिकाष्ठपुष्पादि न ग्राह्यं तदनाज्ञया ॥१७॥

हमारे सत्संगी धर्म कार्य के लिए भी कभी चोरी न करें और मालिक की आज्ञा बिना फूल या काष्ठ इत्यादि वस्तु न लें ॥१७॥

One shall never commit an act of stealing even for a religious or benevolent purpose, nor take any objects like wood, flowers etc. without the owner's permission. ||17||

व्यभिचारो न कर्तव्यः पुम्भिः स्त्रीभिश्च मां श्रितैः ।
द्यूतादि व्यसनं त्याज्यं नाद्यं भङ्गादि मादकम् ॥१८॥

हमारे आश्रित पुरुष या स्त्री कोई भी व्यभिचार न करें तथा जुआँ आदि व्यसनो का त्याग करें और भांग, आदि मादक पदार्थ का सेवन न करें ॥१८॥

My disciples, male or female, shall never commit adultery and should give up gambling and other addictions. And they shall never eat or drink *bhāng* (hashish), hemp, opium and other intoxicants. ||18||

अग्राह्यान्नेन पक्वं यदन्नं तदुदकं च न ।
जगन्नाथपुरं हित्वा ग्राह्यं कृष्णप्रसाद्यपि ॥१९॥

जिसके हाथ का पकाया हुआ अन्न खाना निषेध हो उसके हाथ का बनाया अन्न तथा उसके पात्र का जल भगवान की प्रसादी चरणामृत का माहात्म्य समझकर भी जगन्नाथपुरी को छोडकर अन्य स्थानमें ग्रहण न करें । जगन्नाथपुरी में जगन्नाथजी का प्रसाद लेने में दोष नहीं है ॥१९॥

One shall never accept food or drink prepared by an inappropriate person or his/her utensils, even if it is the Prasād from offerings to Shri Krishna Bhagwān, at any places except in Jagnnāthpuri. In Jagannāthpuri, accepting Prasād from an offering to Jagannāthji is not an offense.||19||

मिथ्यापवादः कस्मिंश्चिदपि स्वार्थस्य सिद्धये ।
नारोप्यो नापशब्दाश्च भाषणीयाः कदाचन ॥२०॥

अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए कभी किसी के ऊपर मिथ्यापवाद का आरोपण न करें और किसी भी समय अपशब्द न बोलें ॥२०॥

One shall never make false accusations even for self-interest, nor shall one use indecent and abusive words. ||20||

देवतातीर्थविप्राणां साध्वीनां च सतामपि ।
वेदानां च न कर्तव्या निन्दा श्रव्या न च क्वचित् ॥२१॥

देवता, तीर्थ, ब्राह्मण, पतिव्रता स्त्री, साधु और वेद इनकी निन्दा कभी न करें और न सुनें ॥२१॥

One shall never speak or listen to slander about deities, holy places (*tirths*), *brāhmins*, chaste women, *sādhus*, and the Vedas. ||21||

देवतायै भवेद्यस्यै सुरामांसनिवेदनम् ।
यत्पुरोऽजादिहिंसा च न भक्ष्यं तन्निवेदितम् ॥२२॥

जिन देवताओं को मदिरा और माँस का नैवेद्य अर्पित किया जाता है तथा जिन देवताओं के आगे बकरे आदि प्राणियों की हिंसा की जाती है उन देवताओंका प्रसाद न खायें ॥२२॥

One shall never accept any offering made to any deity to whom meat or alcohol are offered and before whom goats or other living beings are sacrificed. ||22||

दृष्ट्वाशिवालयादीनि देवागाराणि वर्त्मनि ।
प्रणम्य तानि तद्देवदर्शनं कार्यमादरात् ॥२३॥

मार्ग में चलते शिवालय आदि देव-स्थानों को देखकर उन देवों को आदरपूर्वक प्रणाम करें और आदर से उनका दर्शन करें ॥२३॥

While on one's way, one comes across the temple of Shiv or other deities, one shall bow down and have *darshan* with reverence to the residing deities. ||23||

स्ववर्णाश्रमधर्मो यः स हातव्यो न केनचित् ।
परधर्मो न चाचर्यो न च पाखण्डकल्पितः ॥२४॥

अपने वर्ण-धर्म का और आश्रम धर्म का कोइ भी सत्संगी त्याग न करें तथा दूसरे के धर्म और पाखण्ड तथा कल्पित धर्म का आचरण न करें ॥२४॥

One shall never give up one's own duties as prescribed for one's *varna* (social order) and *āshram* (stages of life). One shall not pursue duties of other *varna* and *āshram*, nor shall one pursue duties of a pretentious or fictitious faith (which are against Vedas). ||24||

कृष्णभक्तेः स्वधर्माद्वा पतनं यस्य वाक्यतः ।
स्यात्तन्मुखान्न वै श्रव्याः कथावार्ताश्च वा प्रभोः ॥२५॥

जिसके वचन को सुनने से भगवान की भक्ति एवं, स्वधर्म से चलित हो जावें ऐसे व्यक्ति के मुख से भगवान की कथा-वार्ता भी न सुनें ॥२५॥

One shall never listen to any religious discourses from a person whose preaching may deviate one from the path of devotion to Shri Krishna Bhagwān or from one's dharma. ||25||

स्वपरद्रोहजननं सत्यं भाष्यं न कर्हिचित् ।
कृतघ्नसङ्गस्त्यक्तव्यो लुञ्चा ग्राह्या न कस्यचित् ॥२६॥

जिन सत्य वचनों को बोलने से अपना तथा दूसरे का द्रोह हो, ऐसा वचन सत्य हो तो भी कभी न बोलें और जो कृतघ्नी हो उनका त्याग करें और व्यवहार कार्य के लिए किसीसे भी कभी घूस न लें ॥२६॥

One shall never speak such truth which might bring harm that is fatal to oneself or

others, nor associate with ungrateful people, nor accept any bribe from anyone. ||26||

चोरपापिव्यसनिनां सङ्गः पाखण्डिनां तथा ।
कामिनां च न कर्तव्यो जनवञ्चनकर्मणाम् ॥२७॥
भक्तिं वा ज्ञानमालम्ब्य स्त्रीद्रव्यरसलोलुभाः ।
पापे प्रवर्तमानाः स्युः कार्यस्तेषां न सङ्गमः ॥२८॥

चोर, पापी, व्यसनी, पाखण्डी, कामी और लोगों को ठगने के उद्देश्य से कार्य करनेवालों का संग न करें ॥२७॥

जो मनुष्य भक्ति अथवा ज्ञानका अवलम्बन करके स्त्री, द्रव्य और रसास्वाद में अतिशय लोलुप होकर पाप में प्रवर्तमान होते हैं उनका संग न करें ॥२८॥

One should avoid the company of six types of deceitful persons: thieves, sinners, addicts, pretentious persons, debauchee and swindlers. ||27||

Also, one should avoid the company of persons who, under the pretext of spiritual knowledge or devotion to God, commit sins for

the sake of their intense desire for wealth, women and pleasures of the tongue. ||28||

**कृष्णाकृष्णावताराणां खण्डनं यत्र युक्तिभिः ।
कृतं स्यात्तानि शास्त्राणि न मान्यानि कदाचन ॥२९॥**

जिन शास्त्रों में श्रीकृष्ण भगवान तथा भगवान के वराहादि अवतारों का युक्तिपूर्वक खण्डन किया गया हो, ऐसे शास्त्रों को कभी न मानें और न सुनें ॥२९॥

One shall not believe or listen to those *shāstras* in which Shri Krishna Bhagwān and His incarnations like *Varāh* have been neglected ingeniously. ||29||

**अगालितं न पातव्यं पानीयं च पयस्तथा ।
स्नानादि नैव कर्तव्यं सूक्ष्मजन्तुमयाम्भसा ॥३०॥**

बिना छाने हुए पानी और दूध को न पीयें और जिस जल में सूक्ष्म जन्तु हों उससे स्नानादि क्रिया न करें ॥३०॥

One shall never drink unfiltered water or milk, nor bathe etc. with water that contains many insects. ||30||

यदौषधं च सुरया सम्पृक्तं पललेन वा ।
अज्ञातवृत्तवैद्येन दत्तं चाद्यं न तत् क्वचित् ॥३१॥

जो औषध मदिरा तथा मांस से युक्त हो तथा जिस वैद्य का आचरण मालूम न हो उसके द्वारा प्रदत्त औषध का सेवन भी न करें ॥३१॥

One shall never take medicine which contains alcohol or meat extract, nor take medicine from a physician whose conduct and character is unknown. ||31||

स्थानेषु लोकशास्त्राभ्यां निषिद्धेषु कदाचन ।
मलमूत्रोत्सर्जनं च न कार्यं ष्ठीवनं तथा ॥३२॥

लोक और शास्त्र के द्वारा जिन स्थानों में मलमूत्र करने तथा थूंकने का निषेध किया गया हो ऐसे स्थानों जीर्ण देवालय, नदी-तालाब के घाट, मार्ग, बोंए हुए खेत, वृक्ष की छाया, बगीचा इत्यादि स्थानक में कभी भी मलमूत्र का त्याग न करें और न थुंके ॥३२॥

One shall never excrete, urinate or even spit in run down temples, banks of rivers and

lakes, walkways, farms, gardens or similar places which have been prohibited by the *shāstras* or by a public authority. ||32||

अद्वारेण न निर्गम्यं प्रवेष्टव्यं न तेन च ।
स्थाने सस्वामिके वासः कार्योऽपृष्ट्वा न तत्पतिम् ।।३३।।

किसी चोर मार्ग से प्रवेश न करें और न निकलें तथा मालिकी युक्त स्थान हो उस स्थान में मालिक से पूछे बिना निवास न करें ।।३३।।

One shall never enter or exit clandestinely through a prohibited passage, nor camp on any private property without the owner's permission. ||33||

ज्ञानवार्ताश्रुतिर्नार्या मुखात् कार्या न पूरुषैः ।
न विवादः स्त्रिया कार्यो न राज्ञा न च तज्जनैः ।।३४।।

हमारे सभी पुरुष सत्संगी स्त्रीयो के मुख से ज्ञान की बातें श्रवण न करें तथा स्त्री, राजा तथा राजपुरुषों के साथ विवाद न करें ।।३४।।

My male disciples shall never listen to the religious discourses given by females, nor enter into arguments with females, rulers or courtiers. ||34||

अपमानो न कर्तव्यो गुरूणां च वरीयसाम् ।
लोके प्रतिष्ठितानां च विदुषां शस्त्रधारिणाम् ॥३५॥

गुरु, वरिष्ठ पुरुष, लोक में अतिशय प्रतिष्ठित मनुष्य, विद्वान् तथा शस्त्रधारी का अपमान न करें ॥३५॥

One should never insult a *guru*, superior, respected person in society, scholar, or one armed with weapons. ||35||

कार्यं न सहसा किञ्चित्कार्यो धर्मस्तु सत्वरम् ।
पाठनीयाऽधीतविद्या कार्यः सङ्गोऽन्वहं सताम् ॥३६॥

कोई भी कार्य विचार किए बिना जल्दबाजी में न करें। परन्तु धर्म सम्बन्धी कार्य को तत्काल करें । अपनी पढ़ी हुई विद्या दुसरों को पढायें और साधु-सन्तों का समागम प्रतिदिन करें ॥३६॥

One shall never perform duties pertaining to social affairs without due deliberation, where as duties pertaining to Dharma shall be performed immediately. The learned shall teach their knowledge to others and always associate with *sādhus*. ||36||

गुरुदेवनृपेक्षार्थं न गम्यं रिक्तपाणिभिः ।
विश्वासघातो नो कार्यः स्वश्लाघा स्वमुखेन च ॥३७॥

गुरु, देव और राजा के दर्शन के लिये खाली हाथ न जायें। किसी से विश्वासघात न करें और अपने मुख से खुदकी प्रशंसा न करें ॥३७॥

One shall never go empty-handed for the *darshan* of a guru, deity or king. One shall never commit a breach of trust, nor indulge in self-praise. ||37||

यस्मिन् परिहितेऽपि स्युर्दृश्यान्यङ्गानि चात्मनः ।
तद्दूष्यं वसनं नैव परिधार्यं मदाश्रितैः ॥३८॥

जिस वस्त्र को धारण करने पर अपने शरीर के अवयव दिखाई पड़े ऐसे अभद्र वस्त्र को हमारे आश्रित धारण न करें ॥३८॥

My followers shall never wear inappropriate clothes, so transparent and fine that would indecently expose their body parts. ||38||

धर्मेण रहिता कृष्णभक्तिः कार्या न सर्वथा ।
अज्ञनिन्दाभयान्नैव त्याज्यं श्रीकृष्णसेवनम् ॥३९॥

धर्म से रहित श्रीकृष्ण भगवान की भक्ति किसी भी प्रकार से न करें तथा अज्ञानी मनुष्य की निंदा के भय से श्रीकृष्ण भगवान की सेवा का त्याग भी न करें ॥३९॥

One shall never practice devotion to Shri Krishna Bhagwān which is devoid of dharma, and shall never give up devotion to Shri Krishna Bhagwān for fear of criticism from ignorant persons. ||39||

उत्सवाहेषु नित्यं च कृष्णमन्दिरमागतैः ।
पुम्भिः स्पृश्या न वनितास्तत्र ताभिश्च पुरुषाः ॥४०॥

प्रतिदिन तथा उत्सव के दिन श्रीकृष्ण के मंदिर में आये हुये सत्संगी पुरुष मंदिर मे स्त्रीयो का स्पर्श न करे तथा स्त्रियाँ पुरुषो का स्पर्श न करें और मंदिर से बाहर निकलने के बाद अपनी रीती अनुसार वर्तन करें ॥४०॥

Men and women shall not touch each other when they visit the temple of Shri Krishna, either daily or on the days of religious festivals. They may behave according to their customs and relations after leaving the temple premises. ||40||

कृष्णदीक्षां गुरोः प्राप्तैस्तुलसीमालिके गले ।
धार्ये नित्यं चोर्ध्वपुण्ड्रं ललाटादौ द्विजातिभिः ॥४१॥
तत्तु गोपीचन्दनेन चन्दनेनाथवा हरेः ।
कार्यं पूजावशिष्टेन केशरादियुतेन च ॥४२॥
तन्मध्य एव कर्तव्यः पुण्ड्रद्रव्येण चन्द्रकः ।
कुङ्कुमेनाथवा वृत्तो राधालक्ष्मीप्रसादिना ॥४३॥

धर्मवंशी गुरु से दीक्षित जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य यह तीन वर्णके हमारे सत्संगी हों वे गले में तुलसी की दोहरी माला नित्य धारण करें और ललाट, हृदय तथा दोनों हाथ - इन चारो स्थानों पर उर्ध्वपुण्ड्र तिलक करें ॥४१॥

यह तिलक गोपीचन्दन से अथवा भगवान की पूजा से बचा हुआ जो केसरादि युक्त प्रसादिके चन्दन से करें ॥४२॥

उस तिलक के बीच में जिससे तिलक किया जाय उस चन्दन से अथवा राधाजी तथा लक्ष्मीजी के प्रसादरूप कुमकुम से गोलाकार चन्द्रक करें ॥४३॥

My *Brāhmin*, *Kshatriya*, and *Vaishya* disciples, who have been initiated by their *Āchārya*, shall always wear around their neck a double lined *kanthi* (necklace), prepared from the wood of *tulsi*. They shall also wear an *urdhvapundra* (U-shaped) *tilak* on their forehead, chest, and both upper arms. ||41||

The *tilak* should be made with *Gopichandan* or left over consecrated sandalwood paste mixed with saffron and *kumkum* that has been offered to Shri Krishna. ||42||

In the center of the *tilak*, one shall make a round mark of *Gopichandan* or *kumkum* which has been offered to Rādha or Lakshmi. ||43||

सच्छुद्राः कृष्णभक्ता ये तैस्तु मालोर्ध्वपुण्ड्रके ।
द्विजातिवद्धारणीये निजधर्मेषु संस्थितैः ॥४४॥
भक्तैस्तदितरैर्माले चन्दनादीन्धनोद्भवे ।
धार्ये कण्ठे ललाटेऽथ कार्यः केवलचन्द्रकः ॥४५॥
त्रिपुण्ड्ररूद्राक्षधृतिर्येषां स्यात्स्वकुलागता ।
तैस्तु विप्रादिभिः क्वापि न त्याज्या सा मदाश्रितैः ॥४६॥

अपने धर्म में तत्पर रहते हुए जो भगवान के भक्त सत्शुद्र हैं वे लोग द्विजाति के समान ही उर्ध्वपुण्ड्र तिलक तथा तुलसी की माला धारण करें ॥४४॥

जो भगवान के भक्त असत् शूद्र हैं वे लोग अपने गले में चन्दनादि काष्ठ की माला धारण करें तथा ललाट में केवल चन्द्रक करें परंतु तिलक न करें ॥४५॥

जिन ब्राह्मणादिक को त्रिपुण्ड्र करना तथा रुद्राक्ष की माला धारण करना ये दो बातें अपनी कुलपरंपरा से प्राप्त हो, और वे ब्राह्मणादिक हमारे आश्रित बने हो तो भी वे त्रिपुण्ड्र तथा रुद्राक्ष का कदापि त्याग न करें ॥४६॥

The *sat-shudra* devotees of Shri Krishna, observing their dharma, shall wear a *kanthi* and apply *tilak* marks similar to those of *brāhmins*, etc. ||44||

The rest of the devotees (classed below sat-shudra) shall wear a sanctified double lined *kanthi* of sandalwood or other beads, and apply only a round *kumkum* mark on their forehead. ||45||

Brāhmins and other devotees who inherited the traditions and customs of

marking their forehead with *tripundra*, and wearing a necklace of *rudrāksha* beads, shall continue to do so even after becoming my disciples. ||46||

ऐकात्म्यमेव विज्ञेयं नारायणमहेशयोः ।
उभयोर्ब्रह्मरूपेण वेदेषु प्रतिपादनात् ।।४७।।

नारायण तथा शिवजी उन दोनों में एकात्मता ही समझें क्योंकि वेदों में उन दोनों का ब्रह्मरूप से प्रतिपादन किया गया है ।।४७।।

It must be known oneness between Narāyan and Shiv because both are described as *brahmrup* in the Vedas. ||47||

शास्त्रोक्त आपद्धर्मो यः स त्वल्पापदि कर्हिचित् ।
मदाश्रितैर्मुख्यतया ग्रहीतव्यो न मानवैः ।।४८।।

हमारे आश्रित मनुष्य शास्त्रों द्वारा प्रतिपादित आपद्धर्म को अल्प आपत्काल में प्रमुख रूप से कदापि ग्रहण न करें ।।४८।।

My devotees shall not adopt the *āpaddharma* (duties of exigency) prescribed in the *shāstra* as the prime duties during minor unfavorable situation. ||48||

प्रत्यहं तु प्रबोद्धव्यं पूर्वमेवोदयाद्रवेः ।
विधाय कृष्णस्मरणं कार्यः शौचविधिस्ततः ॥४९॥
उपविश्यैव चैकत्र कर्तव्यं दन्तधावनम् ।
स्नात्वा शुच्यम्बुना धौते परिधार्ये च वाससी ॥५०॥
उपविश्य ततः शुद्ध आसने शुचिभूतले ।
असङ्कीर्ण उपस्पृश्यं प्राङ्मुखं वोत्तरामुखम् ॥५१॥

हमारे आश्रित सत्संगी प्रतिदिन सूर्योदय से पूर्व ही निद्रा का त्याग करें तथा श्रीकृष्ण भगवान् का स्मरण करके तत्पश्चात् शौचविधि आदि क्रिया करें ॥४९॥

तत्पश्चात् एक स्थान में बैठकर दन्तशुद्धि करे; बाद में पवित्र जल से स्नान करके धोयें हुए दो वस्त्र-एक धोती तथा एक उत्तरीय धारण करें ॥५०॥

इसके बाद पवित्र पृथ्वी पर बिछाये हुए शुद्ध, दूसरे अपवित्र आसन से अस्पृष्ट तथा जिस पर अच्छी तरह से बैठा

जा सके ऐसे विस्तीर्ण आसन उपर पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख बैठकर आचमन करें ।।५१।।

My disciples must wake up daily before sunrise and remember Shri Krishna Bhagwān before answering the call of nature. ||49||

Thereafter, sitting in one place, they shall brush their teeth and bathe with clean water. Then, wear a pair of washed clothes. ||50||

Then they shall sit either facing north or east on a comfortable *āsan* (seat) laid upon a purified place, untouched by others, and shall take *āchamanam* (sipping pure water three times). ||51||

कर्तव्यमूर्ध्वपुण्ड्रं च पुम्भिरेव सचन्द्रकम् ।
कार्यः सधवनारीभिर्भाले कुङ्कुमचन्द्रकः ।।५२।।
पुण्ड्रं वा चन्द्रको भाले न कार्यो मृतनाथया ।
मनसा पूजनं कार्यं ततः कृष्णस्य चाखिलैः ।।५३।।

उसके बाद हमारे आश्रित सभी पुरुष गोल चन्द्रक सहित उर्ध्वपुंड्र तिलक करें और जो सधवा स्त्रियाँ हो वे अपने भाल पर कुंकुम का चन्द्रक करें ।।५२।।

विधवा स्त्रियाँ हो वे अपने भाल में तिलक न करें तथा चन्द्रक भी न करें। उसके बाद हमारे सभी सत्संगी मन से कल्पित चन्दन पुष्पादि उपचारों द्वारा श्रीकृष्ण भगवान् की मानसी पूजा करें ।।५३।।

All male devotees shall apply a *tilak* with a round *kumkum* mark and all married women shall apply only a round mark of *kumkum* on their forehead. ||52||

Widows shall not apply either a *tilak* or a round *kumkum* mark to their forehead. All My disciples shall then offer *mānsipooja* (mental worship by the means of sandalwood paste, flowers etc.) to Shri Krishna Bhagwān. ||53||

प्रणम्य राधाकृष्णस्य लेख्यार्चां तत आदरात् ।
शक्त्या जपित्वा तन्मन्त्रं कर्तव्यं व्यावहारिकम् ।।५४।।

इसके बाद राधाकृष्ण की चित्र-प्रतिमा का आदरपूर्वक दर्शन-नमस्कार करके अपनी शक्ति अनुसार श्रीकृष्ण के अष्टाक्षर मन्त्र का जप करें और बाद में अपना व्यावहारिक कार्य करें ॥५४॥

Thereafter, all shall respectfully do *darshan* and bow to the Image of Shri Rādhākrishna, then shall repeat Shri Krishna's *mantra* (eight-syllabled one) according to their ability and then shall attend to their worldly affairs or jobs. ||54||

ये त्वम्बरीषवद्भक्ताः स्युरिहात्मनिवेदिनः ।
तैश्च मानसपूजान्तं कार्यमुक्तक्रमेण वै ॥५५॥

और हमारे सत्संगी जनों में राजा अंबरीष के समान जो आत्मनिवेदी उत्तम भक्त हो वे भी पूर्वोक्त क्रमानुसार मानसी पूजा पर्यंत सभी क्रिया अवश्य करें ॥५५॥

Even the superior, *Ātmanivedi* (those who have surrendered fully and dedicated their

lives to God) devotees, like King Ambarish, shall perform the daily rituals in sequence as described above, up to *mānsipooja*. ||55||

शैली वा धातुजा मूर्तिः शालग्रामोऽर्च्य एव तैः ।
द्रव्यैर्यथाप्तैः कृष्णस्य जप्योऽथाष्टाक्षरो मनुः ॥५६॥

वे आत्मनिवेदी भक्त पाषाण या धातु से निर्मित श्रीकृष्ण भगवान् की प्रतिमा का अथवा शालिग्राम का पूजन देशकालानुसार यथाशक्ति उपलब्ध चन्दन, पुष्प, फलादि उपहारों से करें और बाद में श्रीकृष्ण भगवान के अष्टाक्षर मन्त्र का जप करें ॥५६॥

Those *ātmanivedi* devotees shall worship *murtis* of Shri Krishna Bhagwān made either of stone or metal, or *Shaligrām* (a self-manifested black round smooth stone worshipped as the symbol of God Vishnu) with the available articles of worship like sandal paste, fruits and flowers according to time, place and their abilities. And they shall then chant the eight-

syllabled holy *mantra* of Shri Krishna Bhagwān. ||56||

स्तोत्रादेरथ कृष्णस्य पाठः कार्यः स्वशक्तितः ।
तथाऽनधीतगीर्वाणैः कार्यं तन्नामकीर्तनम् ।।५७।।

इसके बाद श्रीकृष्ण भगवान के स्तोत्र अथवा ग्रंथ का पाठ अपनी शक्ति के अनुसार करें। संस्कृत भाषा का अभ्यास जिन्होंने किया न हो वे लोग भगवान के नाम-कीर्तन करें।।५७।।

They shall then recite *stotra* (verses in Sanskrit) or read *shāstras* of Shri Krishna Bhagwān according to their ability. Those who do not know Sanskrit shall chant Shri Krishna Bhagwān's name and sing songs in His praise. ||57||

हरेर्विधाय नैवेद्यं भोज्यं प्रासादिकं ततः ।
कृष्णसेवापरैः प्रीत्या भवितव्यं च तैः सदा ।।५८।।

श्रीकृष्ण भगवान को नैवेद्य समर्पण करके उस नैवेद्य को प्रसादरूप में ग्रहण करें तथा वे आत्मनिवेदी वैष्णव भक्त प्रीति से श्रीकृष्ण भगवान की सेवा परायण निरन्तर रहें।।५८।।

Then offer food to Shri Krishna Bhagwān and then eat it as His *prasād* (food offered to deity). And that *ātmanivedi* devotee may always remain affectionately in the service of Shri Krishna Bhagwān. ||58||

प्रोक्तास्ते निर्गुणा भक्ता निर्गुणस्य हरेर्यतः ।
सम्बन्धात्तत्क्रियाः सर्वा भवन्त्येव हि निर्गुणाः ॥५९॥

निर्गुण अर्थात् माया के तीनों गुण (सत्त्व, रज,तम) से रहित ऐसे जो परमात्मा हैं उनके सम्बन्ध से आत्मनिवेदी भक्त की सभी क्रियाएँ निर्गुण होती हैं इसी हेतु से वे आत्मनिवेदी भक्त भी निर्गुण कहलाते हैं ॥५९॥

The one completely free from the mundane qualities like *satva, raj* and *tam* is called *nirgun*. Lord Shri Krishna is *nirgun*. Due to those *ātmanivedi* devotees' association with Shree Krishna Bhagwān, all of their actions also become *nirgun*. Therefore, *shāstras* proclaim these *ātmanivedi* devotees are *nirgun*. ||59||

भक्तैरेतैस्तु कृष्णायानर्पितं वार्यपि क्वचित् ।
न पेयं नैव भक्ष्यं च पत्रकन्दफलाद्यपि ॥६०॥

वे आत्मनिवेदी भक्तगण भगवान को निवेदन किये बिना कभी जल न पीयें और पत्र, कंद फल आदि जो वस्तु वो श्रीकृष्ण भगवानको अर्पण किये बिना न खायें ॥६०॥

The *Ātmanivedi* devotees shall never drink water or eat roots, vegetables, fruits, etc. without first offering them to Shri Krishna Bhagwān. ||60||

सर्वैरशक्तौ वार्धक्याद्गरीयस्यापदाऽथवा ।
भक्ताय कृष्णमन्यस्मै दत्त्वा वृत्त्यं यथाबलम् ॥६१॥

वृद्धावस्था से या कोई बड़ी आपत्ति आ जाने से उपरोक्त सभी भक्तगण यदि भगवान की पूजा करनेमें असमर्थ हो जाएँ तब अपने पास रही जो भगवान की मूर्ति है उसको अन्य भक्त को देकर अपनी शक्ति के अनुसार व्यवहार करें ॥६१॥

All My devotees who, due to old age or some major adversity, are unable to offer worship shall give their *murti* (image) of Shri

Krishna to another devotee and offer devotion according to their ability. ||61||

आचार्येणैव दत्तं यद्यच्च तेन प्रतिष्ठितम् ।
कृष्णस्वरूपं तत्सेव्यं वन्द्यमेवेतरत्तु यत् ।।६२।।

श्रीकृष्णका स्वरूप अपने सेवनके लिए धर्मवंशके आचार्यने हि दिया हो अथवा उनसे प्रतिष्ठित की गयी जो भगवान की मूर्ति है वही सेवा के योग्य है । इसके अतिरिक्त मूर्ति तो केवल वंदन करने के योग्य हैं परन्तु सेवा के योग्य नहीं हैं ।।६२।।

They shall worship only those *murtis* of Shri Krishna which have been given to them by the *Ācharya* or installed by him. All other forms of Shri Krishna should be bowed down to respectfully but not to be worshiped. ||62||

भगवन्मन्दिरं सर्वैः सायं गन्तव्यमन्वहम् ।
नामसङ्कीर्तनं कार्यं तत्रोच्चैः राधिकापतेः ।।६३।।
कार्यास्तस्य कथावार्ताः श्रव्याश्च परमादरात् ।
वादित्रसहितं कार्यं कृष्णकीर्तनमुत्सवे ।।६४।।

हमारे सभी भक्जतन प्रतिदिन सायंकाल भगवान के मंदिर में जावें और वह मंदिरमें श्रीराधिकाजीके पति एसे जो श्रीकृष्ण भगवान उनके नाम का उच्च स्वर में संकीर्तन करें ॥६३॥

और वह श्रीकृष्ण की जो कथा–वार्ता उसे परम आदरसें करें और सुनें तथा उत्सव के दिन मृदंग आदि वाद्यों सहित भगवान का कीर्तन करें ॥६४॥

All My devotees shall daily go to the temple of Shri Krishna in the evening. While in the temple, they shall sing loudly songs in praise of Shri Krishna Bhagwān, who is the husband of Rādhā, and chant His name. ||63||

They should read and listen to the narrations of God's life with deep reverence, and during festivals, should sing His songs to the accompaniment of musical instruments. ||64||

प्रत्यहं कार्यमित्थं हि सर्वैरपि मदाश्रितैः ।
संस्कृतप्राकृतग्रन्थाभ्यासश्चापि यथामति ॥६५॥

हमारे सभी आश्रित उपरोक्त रीत से नित्य व्यवहार करें और अपनी मति के अनुसार प्रतिदिन संस्कृत तथा प्राकृत ग्रंथो का अभ्यास भी करें ॥६५॥

All My devotees must follow the course of daily activities as prescribed above, and also study, to the best of their ability, the religious *sat-shāstras* in Sanskrit or their regional language.||65||

यादृशैर्यो गुणैर्युक्तस्तादृशे स तु कर्मणि ।
योजनीयो विचार्यैव नान्यथा तु कदाचन ॥६६॥

जो मनुष्य जैसे गुणों से युक्त हो उसको वैसे कार्य में विचार करके ही प्रेरीत करें परंतु जिस कार्यमे योग्य न हो तो उसमें न प्रेरीत करें ॥६६॥

A person should only be assigned to a task according to his abilities after careful deliberation of his suitability, but never assigned to a task for which he is unsuitable. ||66||

अन्नवस्त्रादिभिः सर्वे स्वकीयाः परिचारकाः ।
सम्भावनीयाः सततं यथायोग्यं यथाधनम् ॥६७॥

हमारे सभी आश्रित, अपने सभी सेवकोकी अपने सामर्थ्यके अनुसार अन्नवस्त्रादि द्वारा यथायोग्य सम्भावना निरंतर करें ॥६७॥

Those who have people providing services to them shall always take appropriate care of them by providing them with food, clothes and other necessities according to one's means. ||67||

यादृग्गुणो यः पुरुषस्तादृशा वचनेन सः ।
देशकालानुसारेण भाषणीयो न चान्यथा ॥६८॥

जो पुरुष जैसे गुणों से युक्त हो उसको वैसे वचनों से देशकाल के अनुसार बुलाएं। अन्य प्रकार से न बुलाएं ॥६८॥

A person should be addressed according to his status, taking into consideration the prevalent time and place, but not otherwise. ||68||

गुरुभूपालवर्षिष्ठत्यागिविद्वत्तपस्विनाम् ।
अभ्युत्थानादिना कार्यः सन्मानो विनयान्वितैः ॥६९॥

विनयसे युक्त हमारे सभी आश्रित सत्संगी, उन्होने गुरु, राजा, अतिवृद्ध, त्यागी, विद्वान तथा तपस्वी यह छे जन आये तब सन्मुख उठकर आसन देवें और मधुर वचनसे बुलाएं इत्यादिक क्रियासे उनका सन्मान करें ॥६९॥

My wise devotees shall honor the arrival of a guru, a king, an aged person, a *sādhu*, a scholar and an ascetic by proper actions such as rising from their seat, offering them a proper seat and welcoming them with pleasant words. ||69||

नोरौ कृत्वा पादमेकं गुरुदवेनृपान्तिके ।
उपवेश्यं सभायां च जानू बद्ध्वा न वाससा ॥७०॥

गुरु, देव तथा राजा के आगे तथा सभा में पैर पर पैर चढ़ाकर तथा दोनों घुटनों को वस्त्र सें बाँधकर न बैंठें ॥७०॥

In the presence of a guru, deity, king or in a congregation, one shall not sit with one leg placed over the other or with their knees bound

with a cloth strap (Postures that could be considered disrespectful). ||70||

विवादो नैव कर्तव्यः स्वाचार्येण सह क्वचित् ।
पूज्योऽन्नधनवस्त्राद्यैर्यथाशक्ति स चाखिलैः ।।७१।।
तमायान्तं निशम्याशु प्रत्युद्गन्तव्यमादरात् ।
तस्मिन् यात्यनुगम्यं च ग्रामान्तावधि मच्छ्रितैः ।।७२।।

हमारे आश्रित सभी सत्संगी अपने आचार्य के साथ कभी भी विवाद न करें तथा अपनी शक्ति के अनुसार अन्न-धन-वस्त्रादि द्वारा उनकी पूजा करें ।।७१।।

हमारे आश्रितगण अपने आचार्य को आते हुए सुनकर आदर से तत्काल उनके सामने जायें तथा आचार्य के वापस लौटने पर गाँव की सीमा तक उनकी बिदाई करने जायें ।।७२।।

My disciples shall never enter into arguments with their Ācharya, and shall offer reverence to him by offering him food, money, clothing, etc., according to their means. ||71||

My disciples, on hearing of the arrival of their *Ācharya*, shall immediately proceed to

welcome him with respect, and on his departure, shall accompany him to the outskirts of the village or town to bid him farewell. ||72||

अपि भूरिफलं कर्म धर्मापेतं भवेद्यदि ।
आचर्यं तर्हि तन्नैव धर्मः सर्वार्थदोऽस्ति हि ॥७३॥

कोई भी कर्म प्रचुर फल देने वाला हो परन्तु धर्महीन हो तो उसका आचरण कभी भी न करें। क्योंकि धर्म ही सभी पुरुषार्थ को देनेवाला है। इसलिए कीसीभी फलके लोभसे धर्मका त्याग न करें ॥७३॥

None shall ever perform an act which is likely to yield great advantages, but which is devoid of *dharma* (scriptural or religious tenets); because *dharma* alone is capable of fulfilling the four *purushārths*. Therefore, one shall not give up *dharma* on the temptation of any benefit. ||73||

पूर्वैर्महद्भिरपि यदधर्माचरणं क्वचित् ।
कृतं स्यात्तत्तु न ग्राह्यं ग्राह्यो धर्मस्तु तत्कृतः ॥७४॥

पूर्वकाल में हुवे महापुरुषों के द्वारा भी कदाचित् अधर्म का आचरण हुआ हो तो भी उसका ग्रहण न करें । उनके द्वारा किया हुआ जो धर्माचरण है उसका ग्रहण करें ।।७४।।

Actions of past great men which are not in conformity with *dharma* shall never be accepted and followed as precedent; but those actions with conform with *dharma*, shall be adopted and followed. ||74||

गुह्यवार्ता तु कस्यापि प्रकाश्या नैव कुत्रचित् ।
समदृष्ट्या न कार्यश्च यथार्हार्चाव्यतिक्रमः ।।७५।।

किसीकी भी गुप्त बातों को कहीं भी प्रकाशित न करें और जिसका जिस रूप से सम्मान करना योग्य हो उसका उसी प्रकार से सम्मान करें । किन्तु ऐसे प्रसंगो पर 'समदृष्टि' रखकर मर्यादा का उल्लंघन न करें ।।७५।।

One shall never divulge the secrets of any other persons anywhere and to anyone. One shall give due respect to deserving souls as appropriate. This rule shall not be violated in the name of equality. ||75||

विशेषनियमो धार्यश्चातुर्मास्येऽखिलैरपि ।
एकस्मिन् श्रावणे मासि सत्वशक्तैस्तु मानवैः ॥७६॥
विष्णोः कथायाः श्रवणं वाचनं गुणकीर्तनम् ।
महापूजा मन्त्रजपः स्तोत्रपाठः प्रदक्षिणाः ॥७७॥
साष्टाङ्गप्रणतिश्चेति नियमा उत्तमा मताः।
एतेष्वेकतमो भक्त्या धारणीयो विशेषतः ॥७८॥

हमारे आश्रित सभी सत्संगिजन चातुर्मास मे विशेष नियम धारण करें और जो व्यक्ति असमर्थ हो, वह केवल श्रावणमास में विशेष नियम धारण करें ॥७६॥

विशेष नियमों में, भगवान की कथा का श्रवण करना, कथा पठन करना, भगवान के गुणों का कीर्तन करना, षोडशोपचार से भगवान की महापूजा करना, भगवान के मंत्र का जाप करना, स्तोत्र पाठ करना, भगवान की प्रदक्षिणा करना ॥७७॥

तथा भगवान को साष्टांग प्रणाम करना । यही आठ नियम हमने उत्तम माने हैं। उन नियमों में से किसी एक नियम को भक्तिभाव से चातुर्मास में विशेष नियम के रूप में धारण करें ॥७८॥

All My disciples shall perform additional religious activities during *chāturmās* (beginning from the eleventh day of the bright half of the Ashādh month to the eleventh day of the bright half of Kārtik). Those who are unable to do so shall perform them at least during the month of Shrāvan (the tenth month in the Hindu calendar). ||76||

These additional religious activities are 1. Listening to and; 2. Reading the divine narratives of the glories of Lord Shree Vishnu; 3. Singing *kirtans* in praise of His divine qualities; 4. Performing *mahāpoojā* of the Lord by bathing Him with *panchāmrit*; 5. Chanting His holy name or His *mantra*; 6. Reciting holy stanzas in His glorification; 7. Performing *pradakshinā* (circumambulation of Lord) ||77||

8. Offering respect to Him by *sāshtang dandvat pranām* (prostration). These eight practices are considered to be the best by me.

All my disciples shall practice any one of them devoutly as an additional religious practice during the period of *chāturmās*. ||78||

एकादशीनां सर्वासां कर्तव्यं व्रतमादरात् ।
कृष्णजन्मदिनानां च शिवरात्रेश्च सोत्सवम् ॥७९॥

सभी एकादशियों का व्रत आदर से करें । श्रीकृष्ण भगवान के जन्मदिन आदि जन्माष्टमी का व्रत और महाशिवरात्रि का व्रत आदरसे करें । उस व्रतके दिन बडे बडे उत्सव करें ॥७९॥

All shall devoutly observe the *vrata* (fast) of all *ekādashi* (Twice monthly, Eleventh day in Hindu calendar). Similarly, they shall observe the *vrata* like the birthday of Shri Krishna Bhagwān, Janmāshtami, etc., and Shivrātri. These *vrata* shall be celebrated with great reverence and grand festivity. ||79||

उपवासदिने त्याज्या दिवानिद्रा प्रयत्नतः ।
उपवासस्तया नश्येन्मैथुनेनेव यन्नृणाम् ॥८०॥

जिस दिन व्रत का उपवास किया हो उसी दिवस की निद्रा का त्याग प्रयत्न पूर्वक करें। क्योंकि जैसे मैथुन करने से उपवास नष्ट होता है वैसे ही दिन में निद्रा करने से मनुष्य के उपवासका नाश होता है ॥८०॥

One shall diligently avoid sleeping during the daytime on days of fasting. Just as sexual indulgence nullifies the fast, similarly, sleeping during the daytime also makes the fast futile. ||80||

सर्ववैष्णवराजश्रीवल्लभाचार्यनन्दनः।
श्रीविठ्ठलेशः कृतवान् यं व्रतोत्सवनिर्णयम् ॥८१॥

कार्यास्तमनुसृत्यैव सर्व एव व्रतोत्सवाः ।
सेवारीतिश्च कृष्णस्य ग्राह्या तदुदितैव हि ॥८२॥

सब वैष्णवों के राजा श्री वल्लभाचार्यजी उनके पुत्र श्री विठ्ठलनाथजी ने व्रत तथा उत्सव का निर्णय किया है ॥८१॥

और श्री विठ्ठलनाथजीने किया जो व्रत तथा उत्सव का निर्णय उनका हि अनुसरण करके सभी व्रत तथा उत्सव

करें तथा श्रीविठ्ठलनाथजीने कहि हुई श्रीकृष्ण भगवान की सेवारीति उसका ही ग्रहण करें ॥८२॥

The days of *vratas* and festivals which have been as prescribed by Shree Vitthalnāthji, son of Shree Vallabhāchārya, a king among the *vaishnavas*. ||81||

One shall observe all the *vratas* and festivals, explicitly follow the decision of Vitthalnāthji, and adopt the method for the worship of Shree Krishna, only as prescribed by Shree Vitthalnāthji. ||82||

कर्तव्या द्वारिकामुख्यतीर्थयात्रा यथाविधि ।
सर्वैरपि यथाशक्ति भाव्यं दीनेषु वत्सलैः ॥८३॥

हमारे सभी आश्रित, द्वारिका आदि जो तीर्थ है, उसकी यात्रा अपने सामर्थ्यानुसार यथाविधि संपन्न करें और अपनी शक्ति अनुसार दीनजनों पे दयावान होवें ॥८३॥

My disciples shall make a pilgrimage to holy places like Dwārikā as prescribed by the

shāstras, and according to their capacity. And they should be kind towards the poor according to their means. ||83||

विष्णुः शिवो गणपतिः पार्वती च दिवाकरः ।
एताः पूज्यतया मान्या देवताः पञ्च मामकैः ॥८४॥

मेरे सभी आश्रितों विष्णु, शिव, गणपति, पार्वती तथा सूर्य इन पाँच देवों को पूज्य रूप से मानें ॥८४॥

My followers shall regard the five deities named here with reverence: Vishnu, Shiva, Ganapati, Pārvati and the Sun. ||84||

भूताद्युपद्रवे क्वापि वर्म नारायणात्मकम् ।
जप्यं च हनुमन्मन्त्रो जप्यो न क्षुद्रदैवतः ॥८५॥

कभी भूतप्रेतादि से पीड़ित होने पर नारायण कवच का पाठ करें और हनुमानजी के मन्त्र का जाप करें । परन्तु किसी क्षुद्र देवता के मन्त्र का जाप न करें ॥८५॥

In the event of afflictions caused by any evil spirits or ghosts, they shall chant Narāyan

Kavacham or the mantra of Hanumān, but shall never chant the mantras of inferior deities. ||85||

रवेरिन्दोश्चोपरागे जायमानेऽपराः क्रियाः ।
हित्वाशु शुचिभिः सर्वैः कार्यः कृष्णमनोर्जपः ॥८६॥
जातायामथ तन्मुक्तौ कृत्वा स्नानं सचेलकम् ।
देयं दानं गृहिजनैः शक्त्याऽन्यैस्त्वर्च्य ईश्वरः ॥८७॥

सूर्य और चन्द्र के ग्रहण होने पर सभी अन्य क्रियाओं का तत्काल त्याग करके पवित्र होकर भगवान के मंत्र का जाप करें ॥८६॥

और ग्रहण के मोक्ष के बाद वस्त्र सहित स्नान करके जो हमारे गृहस्थजन सत्संगी हों वे यथाशक्ति दान करें और त्यागीजन भगवान की पूजा करें ॥८७॥

During the solar or lunar eclipse, all shall immediately drop all activities and after bathing and purifying themselves, shall chant the *mantra* or name of Shri Krishna Bhagwān. ||86||

When the eclipse is over, they shall bathe together with all clothes worn at that time. The *grahasthas* (householders) shall donate according to their means and *sādhus* shall worship God. ||87||

जन्माशौचं मृताशौचं स्वसम्बन्धानुसारतः ।
पालनीयं यथाशास्त्रं चातुर्वर्ण्यजनैर्मम ।।८८।।

हमारे सत्संगी जो चारों वर्णो के लोग वें अपने-अपने सम्बन्ध के अनुसार शास्त्र प्रतिपादित जन्म-सूतक तथा मरण-सूतक का पालन करें ।।८८।।

My disciples of the four *varnas* (i.e. *Brāhmins*, *Kshatriyas*, *Vaishyas* and *Shudras*) shall observe *sutak* (ceremonial impurity) immediately following the birth or death of a relative, according to the closeness of the relationship, as prescribed by the *shāstras*. ||88||

भाव्यं शमदमक्षान्तिसन्तोषादिगुणान्वितैः ।
ब्राह्मणैः शौर्यधैर्यादिगुणोपेतैश्च बाहुजैः ।।८९।।

वैश्यैश्च कृषिवाणिज्यकुसीदमुखवृत्तिभिः ।
भवितव्यं तथा शूद्रैर्द्विजसेवादिवृत्तिभिः ॥९०॥

ब्राह्मण वर्ण शम, दम, क्षमा, सन्तोष आदि गुणों से युक्त रहें । क्षत्रिय वर्ण शौर्य, धैर्य इत्यादि गुणों से युक्त रहें ॥८९॥

वैश्य लोग कृषि वाणिज्य, व्याज इत्यादि वृत्ति से आजीविका चलायें । शूद्र वर्ण ब्राह्मणादि द्विजों की सेवा आदि करके अपनी आजीविका चलायें ॥९०॥

The *brāhmins* shall cultivate the virtues of tranquility, self-restraint, forgiveness, mercy, contentment, etc. The *kshatriyas* shall cultivate the virtues of bravery and patience etc.. ||89||

The *vaishyas* shall practice farming, trading and commerce, banking, etc., and the *shudras* shall practice service to the *brāhmins* etc. three *varna* and others profession. ||90||

संस्काराश्चाह्निकं श्राद्धं यथाकालं यथाधनम् ।
स्वस्वगृह्यानुसारेण कर्तव्यं च द्विजन्मभिः ॥९१॥

द्विज जन गर्भधानादिक संस्कार, आह्निक (नित्यकर्म) तथा श्राद्ध इन तीनो को अपने गृहसूत्र के अनुसार समय और धन सम्पत्ति के अनुसार करें ॥९१॥

The *dwijas* (*Brāhmins*, *Kshatriyas* and *Vaishyas*, or twice born as they are known) shall perform, according to their financial position, the sixteen *sanskārs*, the daily rituals of worship and the *shrāddh* at the appropriate time as prescribed in their respective *Grihya sutras*. ||91||

अज्ञानाज्ज्ञानतो वाऽपि गुरु वा लघु पातकम् ।
क्वापि स्यात्तर्हि तत्प्रायश्चितं कार्यं स्वशक्तितः ॥९२॥

जाने–अनजाने में छोटा अथवा बड़ा कोई भी पाप हो जाय तो अपनी शक्ति के अनुसार उस पाप का प्रायश्चित करें ॥९२॥

If a major or minor sin is committed, either knowingly or unknowingly, one shall perform atonement for one's sins, according to one's capacity. ||92||

वेदाश्च व्याससूत्राणि श्रीमद्भागवताभिधम् ।
पुराणं भारते तु श्रीविष्णोर्नामसहस्त्रकम् ॥९३॥
तथा श्रीभगवद्गीता नीतिश्च विदुरोदिता ।
श्रीवासुदेवमाहात्म्यं स्कान्दवैष्णवखण्डगम् ॥९४॥
धर्मशास्त्रान्तर्गता च याज्ञवल्क्यऋषेः स्मृतिः ।
एतान्यष्ट ममेष्टानि सच्छास्त्राणि भवन्ति हि ॥९५॥

चारों वेद, व्याससूत्र, पुराणों में श्रीमद् भागवत नाम का पुराण तथा महाभारत में कहा हुआ विष्णु सहस्त्रनाम स्तोत्र, भगवद्‌गीता और विदुरनीति तथा स्कंदपुराण के विष्णुखंड में आया हुआ श्रीवासुदेव माहात्म्य तथा धर्मशास्त्रों में केन्द्रभूत याज्ञवल्क्यस्मृति यह आठ सत्‌शास्त्र हमारे इष्ट हैं॥९३-९४-९५॥

The four Vedas, the Brahma Sutras by Vyas, the Purāna named Shrimad Bhāgavatam, the Shree Vishnu Sahastranām. ||93||

Shrimad Bhagwad Gitā, Vidur-Neeti (code of ethics by Vidur), the Shri Vāsudev Mahātmya from the Vishnu Kānda of the Skand Purān, ||94||

and among the *dharma shāstras*, the *smruti* by Yāgnavalkya Rishi. I prefer and approve the above eight *sat-shāstras*. ||95||

स्वहितेच्छुभिरेतानि मच्छिष्यैः सकलैरपि ।
श्रोतव्यान्यथ पाठ्यानि कथनीयानि च द्विजैः ॥९६॥
तत्राचारव्यवहृतिनिष्कृतानां च निर्णये ।
ग्राह्या मिताक्षरोपेता याज्ञवल्क्यस्य तु स्मृतिः ॥९७॥
श्रीमद्भागवतस्यैषु स्कन्धौ दशमपञ्चमौ ।
सर्वाधिकतया ज्ञेयौ कृष्णमाहात्म्यबुद्धये ॥९८॥

अपना हित चाहने वाले हमारे सभी आश्रितों को उपरोक्त सत्शास्त्रों का श्रवण करना और हमारे आश्रित जो द्विज हैं वे उन सत्शास्त्रों को पढे, पढाएं तथा उनकी कथा करें ॥९६॥

उस आठ सत्शास्त्रों से आचार-व्यवहार और प्रायश्चित के निर्णय के लिए मिताक्षरा टीकायुक्त याज्ञवल्क्य स्मृति का ग्रहण करें ॥९७॥

उन आठ सत्शास्त्रों में जो श्रीमद्‌भागवत पुराण है उसके पंचम स्कन्ध तथा दशम स्कन्ध को श्रीकृष्ण भगवान के माहात्म्य जानने के लिए सब शास्त्रों से अधिक जानें ॥९८॥

My disciples who desire to secure their welfare shall listen to all these eight *sat-shāstras*. The *dwijas* shall study, teach and deliver discourses on them. ||96||

Among these eight *sat-shāstras*, the Smruti of Yāgnavalkya Rishi with its Mitāksharā commentary shall be considered as the guiding authority for making decisions about the conduct of life, social affairs and atonement. ||97||

The fifth and the tenth canto of Shrimad Bhāgwat shall be regarded as the best amongst these eight *sat-shāstras* for acquiring knowledge of the glory of Shri Krishna Bhagwān. ||98||

दशमः पञ्चमः स्कन्धौ याज्ञवल्क्यस्य च स्मृतिः ।
भक्तिशास्त्रं योगशास्त्रं धर्मशास्त्रं क्रमेण मे ॥९९॥
शारीरकाणां भगवद्गीतायाश्चावगम्यताम् ।
रामानुजाचार्यकृतं भाष्यमाध्यात्मिकं मम ॥१००॥

दशम स्कन्ध तथा पंचम स्कन्ध और याज्ञवल्यक्यजी की स्मृति, ये तीनों अनुक्रम से हमारे भक्तिशास्त्र, योगशास्त्र और धर्मशास्त्र हैं, ॥९९॥

श्रीरामानुजाचार्यकृत व्याससूत्र का भाष्य तथा भगवद्गीता का भाष्य ये दोनों हमारे आध्यात्मिक शास्त्र है ॥१००॥

The tenth and fifth canto of Shrimad Bhāgwat and Yāgnavalkya *smruti* are the authoritative *bhakti shāstra*, *yoga shāstra* and *dharma shāstra*, respectively. That is, the tenth canto is *bhakti shāstra*, fifth canto is yoga *shāstra* and Yāgnavalkya *smruti* is *dharma shāstra*. ||99||

The commentaries by Shri Rāmānujācharya on the Vyās Sutra and Shrimad Bhagwad Gitā shall be regarded as philosophical *shāstra* (about science of spiritual knowledge). ||100||

एतेषु यानि वाक्यानि श्रीकृष्णस्य वृषस्य च ।
अत्युकर्षपराणि स्युस्तथा भक्तिविरागयोः ॥१०१॥
मन्तव्यानि प्रधानानि तान्येवेतरवाक्यतः ।
धर्मेण सहिता कृष्णभक्तिः कार्येति तद्रहः ॥१०२॥

यह सब आठ सत्शास्त्रों में जो वचन श्रीकृष्ण भगवान के स्वरूप, धर्म, भक्ति और वैराग्य के अत्यंत उत्कर्ष पर कहे गये हो, उन वचनों को अन्य वचनों की अपेक्षा मुख्य जानना और धर्म सहित ही श्रीकृष्ण भगवान की भक्ति करना यह सभी सत्शास्त्रों का रहस्य है ॥१०१-१०२॥

The portions of these *sat-shāstras* which describe the form of Shri Krishna Bhagwān, *dharma*, *bhakti* and *vairāgya* (detachment) should be believed to be superior over all other portions. The essence of all these *sat-shāstras* is that *bhakti* must be performed with *dharma*. ||101-102||

धर्मो ज्ञेयः सदाचारः श्रुतिस्मृत्युपपादितः ।
माहात्म्यज्ञानुयुग्भूरिस्नेहो भक्तिश्च माधवे ॥१०३॥

वैराग्यं ज्ञेयमप्रीतिः श्रीकृष्णेतरवस्तुषु ।
ज्ञानं च जीवमायेशरूपाणां सुष्ठु वेदनम् ॥१०४॥

श्रुति और स्मृतियों द्वारा प्रतिपादित किया हुआ जो सदाचार है उसको धर्म जानना और श्रीकृष्ण भगवान में माहात्म्यज्ञान युक्त जो प्रचुर स्नेह है उसको भक्ति समझना । श्रीकृष्ण भगवान बिना अतिरिक्त वस्तु में प्रीति न रखना उसको वैराग्य समझना तथा जीव, माया और परमात्मा के स्वरूप को यथार्थ समझना यह ज्ञान कहलाता है ॥१०३-१०४॥

The ethical code (*sadāchār*) prescribed by the *shrutis* (Vedas) and the *smritis* (scriptures associated with veda) is called *dharma*. And profound love for Shri Krishna Bhagwān coupled with full knowledge of His greatness is called *bhakti*. ||103||

Detachment from all objects other than Shri Krishna Bhagwān is called *vairāgya*. The comprehensive understanding of the forms of

jiva, *māyā* and *Ishwar* (God) is called *gyān*. ||104||

हृत्स्थोऽणुसूक्ष्मश्चिद्रूपो ज्ञाता व्याप्याखिलां तनुम् ।
ज्ञानशक्त्या स्थितो जीवो ज्ञेयोऽच्छेद्यादिलक्षणः ।।१०५।।

जीव अर्थात् आत्मा हृदय में रहता है । वह अणु के समान सूक्ष्म है । चैतन्यरूप है और ज्ञाता है। अपनी ज्ञानशक्ति के द्वारा समग्र शरीर में नखशिख पर्यन्त व्याप्त होकर रहता है । अछेद्य, अभेद्य, अजर, अमर इत्यादि लक्षणों से युक्त जीवको जानें ।।१०५।।

Jiva, as tiny as an atom, dwells in the heart. It is all-conscious, the knower and pervades the body from head to toe by the power of its knowledge. The soul should be understood to have the following characteristics: unbreakable, cannot be pierced, ageless, immortal, etc. ||105||

त्रिगुणात्मा तमः कृष्णशक्तिर्देहतदीययोः ।
जीवस्य चाहंममताहेतुर्मायावगम्यताम् ।।१०६।।

जो माया है वह त्रिगुणात्मिका है, अन्धकाररूप है और श्रीकृष्ण भगवानकी शक्ति है तथा जीव को शरीर और शरीर के सम्बन्धियों के प्रति अहं और ममता करवाती है–इस प्रकार माया के स्वरूप को जानें ॥१०६॥

And know *māyā* is *trigunātmikā* (consists of three qualities of matter: *satva*, *raja* and *tama*), full of darkness (ignorance), the power of Shri Krishna Bhagwān, and the very cause gives rise to i-ness for the body and my-ness for those related to the body. ||106||

हृदये जीववज्जीवे योऽन्तर्यामितया स्थितः ।
ज्ञेयः स्वतन्त्र ईशोऽसौ सर्वकर्मफलप्रदः ॥१०७॥

जैसे हृदयमें जीवात्मा है उसी तरह जीव में अन्तर्यामी रूप से ईश्वर रहते है। वह स्वतन्त्र है और सभी जीवों को कर्म फल देने वाले है। इस प्रकार ईश्वर को समझें ॥१०७॥

Just as the *jiva* resides in the heart, *Ishwar* (God) resides in *jiva* with inner controller omniscient prowess and is the absolute

independent controller. He is the bestower of rewards to all, according to their karmas (actions). ||107||

स श्रीकृष्णः परंब्रह्म भगवान् पुरुषोत्तमः ।
उपास्य इष्टदेवो नः सर्वाविर्भावकारणम् ॥१०८॥

वह ईश्वर कौन ? तो परब्रह्म पुरुषोत्तम ऐसे श्रीकृष्ण भगवान वे ईश्वर है तथा वे श्रीकृष्ण हमारे इष्टदेव हैं। उपासना करने योग्य हैं। वे सभी अवतारों के कारण हैं ॥१०८॥

Who is *Ishwar* ? Then, the entity that is *Parbarahma Purushottam* who is known to be Shri Krishna Bhagwān is Ishwar. And that Shree Krishna (*Prabrahma Purushottam*) is our *Ishtadev* (ultimate attainable) and worthy of *upāsanā* (entity worthy of continuously meditated up on) and is the source of all incarnations. ||108||

स राधया युतो ज्ञेयो राधाकृष्ण इति प्रभुः ।
रुक्मिण्या रमयोपेतो लक्ष्मीनारायणः स हि ॥१०९॥

ज्ञेयोऽर्जुनेन युक्तोऽसौ नरनारायणाभिधः ।
बलभद्रादियोगेन तत्तन्नामोच्यते स च ॥११०॥
एते राधादयो भक्तास्तस्य स्युः पाश्वर्तः क्वचित्।
क्वचित्तदङ्गेऽतिस्नेहात्स तु ज्ञेयस्तदैकलः ॥१११॥
अतश्चास्य स्वरूपेषु भेदो ज्ञेयो न सर्वथा ।
चतुरादिभुजत्वं तु द्विबाहोस्तस्य चैच्छिकम् ॥११२॥

सर्वसमर्थ श्रीकृष्ण राधिकाजी के साथ हों तो उन्हें राधाकृष्ण नाम से जानें और रुक्मिणी रूप जो लक्ष्मी हैं उनसे युक्त हों तो उन्हे लक्ष्मीनारायण नाम से जानें ॥१०९॥

और वे श्रीकृष्ण अर्जुन से युक्त हों तो नरनारायण एसे नामसे जानें तथा बलभद्रादि सहित हों तो उन्हें उन उन नामों से जानें ॥११०॥

और वह जो राधादि भक्त कभी श्रीकृष्ण भगवान के पार्श्व भाग में रहते हैं और कभी अत्यन्त स्नेह से श्रीकृष्ण भगवान के अंग में रहते हैं तब तो वे श्रीकृष्ण भगवान अकेले ही है ऐसा समझें ॥१११॥

अतः श्रीकृष्ण भगवान के जो स्वरूप हैं उनमें किसी भी प्रकार का भेद न समझें । चतुर्भुज, अष्टभुज, सहस्त्रभुज

इत्यादि जो भेद मालूम पड़ते हैं वे द्विभुज श्रीकृष्ण की इच्छा से हैं, ऐसा समझें ॥११२॥

When this superior Shri Krishna is accompanied by Rādhā, the dual form should be known as Rādhā-Krishna. When He is with Rukmini, He should be known as Lakshmi-Nārāyan. ||109||

When He is with Arjun, He should be known as Nar-Nārāyan, and when He is with Balbhadra and other devotees, He is named and known by other such appropriate names. ||110||

At times, these devotees such as Rādhā are seen alongside Shri Krishna Bhagwān, but at other times, due to extreme love and devotion, they are absorbed within Shri Krishna Bhagwān and thus, He should be considered as being alone. ||111||

For this purpose, among the various forms of Sri Krishna Bhagwān one should not perceive differences any way and the apparent differences of having four arms, eight arms or thousand arms etc. are really the result of desires of Shri Krishna who has two arms. ||112||

तस्यैव सर्वथा भक्तिः कर्तव्या मनुजैर्भुवि ।
निःश्रेयसकरं किञ्चित्ततोऽन्यन्नेति दृश्यताम् ।।११३।।
गुणिनां गुणवत्ताया ज्ञेयं ह्येतत् परं फलम् ।
कृष्णे भक्तिश्च सत्सङ्गोऽन्यथा यान्ति विदोऽप्यधः।।११४।।

ऐसे जो श्रीकृष्ण भगवान उनकी भक्ति पृथ्वी के सभी मनुष्य करें । उस भक्ति से अन्य कल्याणकारी कोई दूसरा साधन नहीं है ऐसा जानें ।।११३।।

विद्यादि गुणवान जो पुरुष है, उनके गुणों का यही परम फल समझें कि, श्रीकृष्ण भगवान की भक्ति करना तथा सत्संग करना । भक्ति और सत्संग के बिना तो विद्वान भी अधोगति को प्राप्त होता है। ।।११४।।

All human beings on this earth should practice worship (devotion) of this Shri Krisha Bhagawān and all shall realize that besides such devotion, there is no other means that delivers ultimate salvation. ||113||

People with knowledge etc. should realize that the ultimate reward of having such qualities is to do the devotional worship of Shri Krishna Bhagwān and to do *satsang* (association with saintly persons). And without having both *satsang* and devotional worship, even a learned person will attain misery. ||114||

कृष्णस्तदवताराश्च ध्येयास्तत्प्रतिमाऽपि च ।
न तु जीवा नृदेवाद्या भक्ता ब्रह्मविदोऽपि च ॥११५॥

श्रीकृष्ण भगवान तथा उनके अवतार ध्यान करने योग्य हैं तथा श्रीकृष्ण भगवान की जो प्रतिमा वह भी ध्यान करने योग्य है तो उनका ध्यान करें । मनुष्य या देवादि जीव श्रीकृष्ण भगवान के भक्त हों या ब्रह्मवेत्ता हों तो भी वे ध्यान करने योग्य नहीं है। अतः उनका ध्यान न करें ॥११५॥

Shri Krishna Bhagwān and Shri Krishna Bhagwān's incarnations are worthy of meditation and Shri Krishna Bhagwān's *murti*'s can also be worthy of meditation. Thus, meditate upon them. But souls (all other than *Parbrahm*) like humans and demigods are not worthy of meditation, even if they are devotees of Shri Krishna Bhagwān and *brahmvettā* (knower of *brahman*); they are not worthy of being meditated upon. Therefore, do not meditate upon them. ||115||

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् ।
विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥११६॥

स्थूल, सूक्ष्म तथा कारण इन तीन शरीर से विलक्षण एसा जो अपना जीवात्मा उससे ब्रह्मरूप की भावना करके श्रीकृष्ण भगवान की भक्ति सर्व काल में निरन्तर करें ॥११६॥

One should instill the notion of *brahmrup* for one's soul which has distinct characteristics from the three bodies: *sthool*

(gross), *sookshma* (subtle), and *kāran* (causal) and from the platform of *brahmrup*, one should do the devotional worship of Shri Krishna Bhagwān all the time. ||116||

श्रव्यः श्रीमद्भागवतदशमस्कन्ध आदरात् ।
प्रत्यहं वा सकृद्वर्षे वर्षे वाच्योऽथ पण्डितैः ॥११७॥

श्रीमद् भागवत पुराण का जो दशम स्कन्ध है उसे नित्य प्रति आदर भाव से सुनें अथवा प्रतिवर्ष एक बार सुनें और जो पंडित हों वे नित्य पाठ करें अथवा प्रतिवर्ष एक बार पाठ करें ॥११७॥

And listen with full reverence to the tenth canto of Shrimad Bhāgwat daily or at least once a year. Also, scholars (Pundits) should read it daily or at least once a year. ||117||

कारणीया पुरश्चर्या पुण्यस्थानेऽस्य शक्तितः ।
विष्णुनामसहस्त्रादेश्चापि कार्येप्सितप्रदा ॥११८॥

दशम स्कन्ध का पुरश्चरण अपनी शक्ति के अनुसार किसी पवित्र स्थान में करें तथा करवाएं । विष्णुसहस्त्रनाम आदि जो सत्शास्त्र है उनका पुरश्चरण भी अपने सामर्थ्य के अनुसार करें और करवाएं क्योंकि वह पुरश्चरण मनवांछित फल देनेवाला है ॥११८॥

And one should do or have others do *purascharan* (the pious reading of sacred *shāstras* with due rites and ceremonies) of the tenth canto of Shrimad Bhāgwat in holy places. And similarly, one should do or have others do the *purascharan* of Vishnu Sahasranām and other such sacred *shāstra* in a holy place according to one's abilities. What is the significance of such *purascharan*? It can give a desired result. ||118||

दैव्यामापदि कष्टायां मानुष्यां वा गदादिषु ।
यथा स्वपररक्षा स्यात्तथा वृत्त्यं न चान्यथा ॥११९॥

और कष्टप्रद कोई देव सम्बन्धी आपत्ति आये तथा मनुष्य सम्बन्धी आपत्ति आ पडे तथा रोगादि आपत्ति आ

पडे तो उससे अपनी और दूसरे की रक्षा हो वैसा व्यवहार करें। किन्तु अन्य तरह से बर्ताव न करें ॥११९॥

In times of calamity caused by nature, human being(s) or disease, one should conduct oneself in a manner that protects one self and others, but should not act otherwise. ||119||

देशकालवयोवित्तजातिशक्त्यनुसारतः ।
आचारो व्यवहारश्च निष्कृतं चावधार्यताम् ॥१२०॥

आचार, व्यवहार और प्रायश्चित इन तीनों बातों को देश, काल, अवस्था, द्रव्य, जाति और सामर्थ्य के अनुसार जानें ॥१२०॥

Āchār (code of conduct), *vyavhār* (social behaviour) and *prāyaschit* (atonement) should be adopted according to the place and time, age, means, caste and ability of devotees. ||120||

मतं विशिष्टाद्वैतं मे गोलोको धाम चेप्सितम् ।
तत्र ब्रह्मात्मना कृष्णसेवा मुक्तिश्च गम्यताम् ॥१२१॥

हमारा मत विशिष्टाद्वैत है ऐसा समझें तथा हमारा प्रिय जो धाम वह गोलोक है और उस धाम में ब्रह्मरूप से रहकर श्रीकृष्ण भगवान की सेवा करना ही मुक्ति मानी जाती है ॥१२१॥

Our philosophy is *Vishishtadvait* (qualified non-dualism) and the Golok Dhām is our beloved godly abode; And we consider *mukti* (divine salvation) to be offering services to Shri Krishna Bhagwān In that abode from the platform of *brahmarup*. ||121||

एते साधारणा धर्माः पुंसां स्त्रीणां च सर्वतः ।

मदाश्रितानां कथिता विशेषानथ कीर्तये ॥१२२॥

पहले कहे गएं सभी धर्म वे मेरे आश्रित भाई और बहन सभी सत्संगिजनों के सामान्य धर्म हैं । उन सबका सत्संगी मात्र को समान रूप से पालन करना है और उन सभीका जो विशेष धर्म हैं वे पृथक–पृथक रूप से कहते हैं ॥१२२॥

All these *dharmas* described so far are common *dharmas* for all My devotees, renunciants, male and female householders. That is, they all need to follow them in the same way. Now, I will describe additional *dharmas* for all categories of devotees separately. ||122||

आचार्यविशेषधर्माः

मज्ज्येष्ठावरजभ्रातृसुताभ्यां तु कदाचन ।
स्वासन्नसम्बन्धहीना नोपदेश्या हि योषितः ॥१२३॥

आचार्यके विशेष धर्म

धर्मवंशी जो आचार्य और उनकी पत्नियाँ उनके विशेषधर्म प्रथम कहते है । हमारे बड़े भाई और छोटे भाई उनके पुत्र अयोध्याप्रसाद और रघुवीर वे अपने समीप सम्बन्ध रहित जो अन्य स्त्रियाँ हैं उन्हें मन्त्र उपदेश कभी न करें ॥१२३॥

Special *dharmas* of Ācharays

First, I explain the additional dharma for

dharmavanshi Āchāryas and their wives. Ayodhyāprāsadji and Raghuvir, the sons of my elder and younger brothers, should never preach a Mantra to females who are not their close relatives. ||123||

न स्प्रष्टव्याश्च ताः क्वापि भाषणीयाश्च ता नहि ।
कौर्यं कार्यं न कस्मिंश्चिन्न्यासो रक्ष्यो न कस्यचित् ॥१२४॥

उन स्त्रियों का कभी भी स्पर्श न करें और उनके साथ बोले नहीं तथा किसी जीव के साथ क्रूरता न करें तथा किसी की भी धरोहर न रखें ॥१२४॥

They shall never touch nor talk to females not closely related to them. They shall not be cruel to any living beings and shall not hold any deposits for anyone. ||124||

प्रतिभूत्वं न कस्यापि कार्यं च व्यावहारिके ।
भिक्षयापदतिक्रम्या न तु कार्यमृणं क्वचित् ॥१२५॥

व्यवहार कार्य में किसी की भी जमानतदारी न करें तथा कोई आपतकाल आ पडे तो भिक्षा माँगकर अपना निर्वाह

करके आपतकाल पार करें परंतु किसी का कर्जा कभी न करें ॥१२५॥

They should never stand as a guarantor for any person in social affairs. When a period of crisis is encountered, if necessary, they should maintain themselves by alms and pass through that period of crisis, but should never incur debt from anyone. ||125||

स्वशिष्यार्पितधान्यस्य कर्तव्यो विक्रयो न च ।
जीर्णं दत्त्वा नवीनं तु ग्राह्यं तन्नैष विक्रयः ॥१२६॥

अपने शिष्योने धर्म निमित्त अन्न दिया हो उसे बेंचें नहीं और वह अन्न पुराना हो जाय तो पुराना किसी को देकर नया लें इस प्रकार पुराने का नया करना वह विक्रय नहीं कहलाता है ॥१२६॥

They shall not sell food grains that they received from their followers as religious donations. However, if the grains become old, they may exchange them for fresh ones, for

such an exchange is not considered a sale. ||126||

भाद्रशुक्लचतुर्थ्यां च कार्यं विघ्नेशपूजनम् ।
इषकृष्णचतुर्दश्यां कार्याऽर्चा च हनुमतः ।।१२७।।

भाद्र शुक्ल चतुर्थी के दिन गणपति की पूजा करें तथा आश्विन कृष्ण चतुर्दशी के दिन हनुमानजी की पूजा करें ।।१२७।।

On the fourth day of the bright half of the month of *Bhādrapad*, perform the *poojā* (worship) of Shri Ganapati and on fourteenth day of the dark half of the month of Āshwin, perform the *poojā* of Hanumānji. || 127||

मदाश्रितानां सर्वेषां धर्मरक्षणहेतवे ।
गुरुत्वे स्थापिताभ्यां च ताभ्यां दीक्ष्या मुमुक्षवः ।।१२८।।

हमारे आश्रित सभी सत्संगीको धर्मरक्षा के लिए मेरे द्वारा गुरुपद पर स्थापित अयोध्याप्रसाद और रघुवीर, वे मुमुक्षु जनों को दीक्षा दें ।।१२८।।

To protect the dharma of the devotees who have surrendered to Me, I have installed Ayodhyāprashād and Raghuvir as their spiritual leaders. They shall initiate the *mumukshu* (*moksh* aspirants). ||128||

यथाधिकारं संस्थाप्याः स्वे स्वे धर्मे निजाश्रिताः ।
मान्याः सन्तश्च कर्तव्यः सच्छास्त्राभ्यास आदरात् ॥१२९॥

हमारे आश्रित सभी सत्संगिजन को अधिकार के अनुसार अपने-अपने धर्म में रखें, साधु को आदर से मानें तथा सत्शास्त्र का अभ्यास आदरपूर्वक करें ॥१२९॥

They shall see that all followers act in conformity with their respective *Dharmas* based on their merits. They should honor all *sādhu* with due respect and study *sat-shāstra* with reverence. ||129||

मया प्रतिष्ठापितानां मन्दिरेषु महत्सु च ।
लक्ष्मीनारायणादीनां सेवा कार्या यथाविधि ॥१३०॥

जो बड़े मन्दिर हैं उनमें हमारे द्वारा स्थापित किये हुए जो श्री लक्ष्मीनारायण आदि श्रीकृष्ण के स्वरूप हैं उनकी सेवा यथाविधि करें ॥१३०॥

And in the big temples, I have installed the forms of Shri Krishna such as Lakshminārāyan, etc. They shall render services with proper rites and ceremonies to them. ||130||

भगवन्मन्दिरं प्राप्तो योऽन्नार्थी कोऽपि मानवः ।
आदरात्स तु सम्भाव्यो दानेनान्नस्य शक्तितः ॥१३१॥

भगवान के मंदिर में यदि कोई भी मनुष्य अन्न की इच्छा से आये तो अपनी शक्ति के अनुसार आदर से अन्नदान से उनकी आदरपूर्वक संभावना करें ॥१३१॥

They should courteously care for every person who comes to God's temple for food by donating food according to their capabilities. ||131||

संस्थाप्य विप्रं विद्वांसं पाठशालां विधाप्य च ।
प्रवर्तनीया सद्विद्या भुवि यत्सुकृतं महत् ॥१३२॥

विद्यार्थीयों के अध्ययन के लिये पाठशाला की स्थापना करके उसमें एक विद्वान् ब्राह्मण को रखकर पृथ्वी पर सद्विद्या की प्रवृत्ति करवाएं । क्योंकि, विद्या दान से बड़ा पुण्य होता है ॥१३२॥

They shall establish an institution with a learned *brāhmin* as a teacher, to propagate *sadvidyā* (true knowledge) on the earth because such an act to propagate *sadvidyā* is a great meritorious act. ||132|

अथैतयोस्तु भार्याभ्यामाज्ञया पत्युरात्मनः ।
कृष्णमन्त्रोपदेशश्च कर्तव्यः स्त्रीभ्य एव हि ॥१३३॥

अयोध्याप्रसाद और रघुवीर की जो पत्नीयाँ हैं वे अपने पति की आज्ञा से स्त्रियों को ही श्रीकृष्ण के मन्त्र का उपदेश करें किन्तु पुरुष को न करें ॥१३३॥

Now, under the instructions of their husbands, the wives of Ayodhyāpashād and Raghuvir, shall initiate only females by preaching the mantra of Shri Krishna, but not males. ||133||

स्वासन्नसम्बन्धहीना नरास्ताभ्यां तु कर्हिचित् ।
न स्प्रष्टव्या न भाष्याश्च तेभ्यो दर्श्यं मुखं न च ॥१३४॥

उन दोनों आचार्यों की पत्नीयाँ अपने समीप सम्बन्ध रहित पुरुष का स्पर्श कभी न करें । उनके साथ बोलें भी नहीं और उन्हें अपना मुख भी न दिखायें (इस तरह धर्मवंशी आचार्य एवं आचार्य पत्नियाँ के विशेष धर्म कहे गये ।) ॥१३४॥

And the wives of the two *Āchāryas* shall never touch, speak to or even show their face to other males who are not their close relatives. (Thus, I have stated the additional *dharmas* for *dharmavansi Āchāryas* and their wives.) ||134||

गृहस्थविशेषधर्माः

गृहाख्याश्रमिणो ये स्युः पुरुषा मदुपाश्रिताः ।
स्वासन्नसम्बन्धहीना न स्पृश्या विधवाश्च तैः ॥१३५॥
मात्रा स्वस्रा दुहित्रा वा विजने तु वयः स्थया ।
अनापदि न तैः स्थेयं कार्यं दानं न योषितः ॥१३६॥
प्रसङ्गो व्यवहारेण यस्याः केनापि भूपतेः ।
भवेत्तस्याः स्त्रियाः कार्यः प्रसङ्गो नैव सर्वथा ॥१३७॥

गृहस्थके विशेष धर्म

हमारे आश्रित जो गृहस्थाश्रमी पुरुष है, वे अपने समीप सम्बन्ध बिना की जो विधवा स्त्रियाँ है उनका स्पर्श न करें ॥१३५॥

वह गृहस्थाश्रमी पुरुष युवावस्था वाली जो अपनी माता, बहन और पुत्री के साथ भी आपत्काल के बिना एकान्त में न रहें तथा अपनी स्त्री का दान किसी को न करें ॥१३६॥

जिस स्त्री को किसी प्रकार के व्यवहार से राजा का प्रसंग हो, ऐसी स्त्री का प्रसंग किसी प्रकार भी न करें ॥१३७॥

Special *dharmas* of Householders

(Now, I am stating additional *dharmas* for householders.) Male disciples of mine who are householders should not touch any widow who is not closely related to them. ||135||

And such householder men should never remain in a secluded place in absence of unusual circumstances even with their mother, sister or daughter during their youth. They shall never donate their wives to anybody. ||136||

They should never keep close contact of any sort with a woman who has any sort of relationship with a ruler. ||137||

अन्नाद्यैः शक्तितोऽभ्यर्च्यो ह्यतिथिस्तैर्गृहागतः ।
दैवं पित्र्यं यथाशक्ति कर्तव्यं च यथोचितम् ।।१३८।।
यावज्जीवं च शुश्रुषा कार्या मातुः पितुर्गुरोः ।
रोगार्तस्य मनुष्यस्य यथाशक्ति च मामकैः ।।१३९।।

गृहस्थाश्रमी के घर कोई अतिथि आया हो तो अपने सामर्थ्य के अनुसार अन्नादि द्वारा उसका सत्कार करें और होमादिक जो देव कर्म और श्राद्धादिक जो पितृ कर्म हैं वे अपने सामर्थ्य के अनुसार उन्हें यथाविधि जैसा उचित हो वैसा ही करें ॥१३८॥

हमारे आश्रित जो गृहस्थ हो वे माता, पिता, गुरु तथा रोगातुर जो कोई मनुष्य हो उनकी सेवा जीवन-पर्यन्त अपने सामर्थ्य के अनुसार करें ॥१३९॥

Anyone who comes to their house as a guest should be welcomed and properly served with food, etc., according to their means. They should perform all rites pertaining to deities and ancestors in a proper manner and according to their abilities. ||138||

My householder disciples should serve their parents, guru and any person with diseases. They should serve them according to their abilities and throughout their lifetime. ||139||

यथाशक्त्युद्यमः कार्यो निजवर्णाश्रमोचितः ।
मुष्कच्छेदो न कर्तव्यो वृषस्य कृषिवृत्तिभिः ॥१४०॥

अपने वर्णाश्रम के योग्य जो उद्यम है वह अपने सामर्थ्य के अनुसार करें तथा कृषिवृत्ति वाले जो गृहस्थ सत्संगी हैं वे बैल के वृषण का उच्छेद न करें ॥१४०॥

They should engage in vocations that are consistent with their *varna* and *āshram* according to their capabilities. Those householder *satsangis* who are farmers must never castrate a bull. ||140||

यथाशक्ति यथाकालं संग्रहोऽन्नधनस्य तैः ।
यावद्व्ययं च कर्तव्यः पशुमद्भिस्तृणस्य च ॥१४१॥
गवादीनां पशूनां च तृणतोयादिभिर्यदि ।
सम्भावनं भवेत्स्वेन रक्ष्यास्ते तर्हि नान्यथा ॥१४२॥

गृहस्थ सत्संगी अपने सामर्थ्य अनुसार तथा समय के अनुसार जितना घर में खर्च होता हो उतने अन्न द्रव्य का संग्रह करे और जिसके घर में पशु हों ऐसे गृहस्थ अपने सामर्थ्य के अनुसार तृण आदि का संग्रह करें ॥१४१॥

गाय, बैल, भेंस, घोड़ा आदि जो पशु उनकी घास-पानी द्वारा अपने से सम्भालना (देख-रेख) हो सके तो उन पशु को रखें और यदि सम्भालना न हो सके तो न रखें ॥१४२॥

Those householder *satsangis*, considering the future needs, should save grains and money according to the time and their capabilities. And those householders who have cattle, shall also stock up on fodder according to their means. ||141||

One should keep animals like cow, ox, buffalo, horses, etc., if they can be cared for properly with water, fodder, grass etc. Do not keep them if they cannot be properly cared for. ||142||

ससाक्ष्यमन्तरा लेखं पुत्रमित्रादिनाऽपि च ।
भूवित्तदानादानाभ्यां व्यवहार्यं न कर्हिचित् ॥१४३॥
कार्ये वैवाहिके स्वस्यान्यस्य वार्प्यधनस्य तु ।
भाषाबन्धो न कर्तव्यः ससाक्ष्यं लेखमन्तरा ॥१४४॥

साक्षी सह लेख के बिना तो अपने पुत्र तथा मित्रादि के साथ भी पृथ्वी तथा धन के लेन-देन का व्यवहार कभी न करें ॥१४३॥

अपना अथवा दूसरे का विवाह सम्बन्धी कार्य, उसमें दिया जाने वाला धन, उसे साक्षी सह लिखे बिना केवल बोली मात्र से न करें ॥१४४॥

Without a written record with a witness, one should never execute a transaction of land and money, even with their own son, friend etc. ||143||

For any task related to the marriage of one's own or others, appropriate money to be paid for it should not be agreed upon merely verbally without having a written record with a witness. ||144||

आयद्रव्यानुसारेण व्ययः कार्यो हि सर्वदा ।
अन्यथा तु महद्दुःखं भवेदित्यवधार्यताम् ॥१४५॥

द्रव्यस्यायो भवेद्यावान् व्ययो वा व्यावहारिके ।
तौ संस्मृत्य स्वयं लेख्यौ स्वक्षरैः प्रतिवासरम् ॥१४६॥

अपनी आमदनी से प्राप्त द्रव्य के अनुसार निरन्तर खर्च करें । परन्तु उससे अधिक न करें । आय के उपरांत जो खर्च करता है उसे बडा दुःख होता है ऐसा सभी गृहस्थ मन में समझें ॥१४५॥

अपने व्यवहार-कार्य के लिए जितने धन की उपज हो तथा जितना खर्च हो इन दोनों को स्मरण करके नित्य प्रति सुन्दर अक्षरों से खुद आय-व्यय लिखें ॥१४६॥

At all times, they shall spend money according to their income but shall not go over the income. And all householders should clearly understand that those who spend more than their income will suffer severe miseries. ||145||

Each day, in their own legible handwriting, they should recall and keep record of both their income and expenditure relating to their social affairs. ||146||

निजवृत्त्युद्यमप्राप्तधनधान्यादितश्च तैः ।
अर्प्यो दशांशः कृष्णाय विंशोंऽशस्त्विह दुर्बलैः ॥१४७॥

गृहस्थाश्रमी सत्संगी अपनी वृत्ति तथा उद्यम से प्राप्त धनधान्य आदि में से दसवाँ भाग निकालकर श्रीकृष्ण भगवान को अर्पण करें तथा जो व्यवहार में दुर्बल (कम आय वाले) हों वे बीसवाँ भाग अर्पण करें ॥१४७॥

The householder *satsangis* shall offer one tenth portion of their money, grains etc. earned through their vocations to Shri Krishna Bhagwān. Those who are financially weaker shall offer one twentieth portion of their income. ||147||

एकादशीमुखानां च व्रतानां निजशक्तितः ।
उद्यापनं यथाशास्त्रं कर्तव्यं चिन्तितार्थदम् ॥१४८॥

एकादशी आदि व्रतोंका उद्यापन अपने सामर्थ्य के अनुसार यथाशास्त्र करें । वह उद्यापन तो मनोवांछित फल देने वाला हैं ॥१४८॥

The prescribed ceremony at the completion of the *vratas* like *ekādashi*, shall be performed according to their means and as per *shāstras*. What is the significance of such ceremony? It gives one desired rewards. ||148||

कर्तव्यं कारणीयं वा श्रावणे मासि सर्वथा ।
बिल्वपत्रादिभिः प्रीत्या श्रीमहादेवपूजनम् ॥१४९॥

श्रावण मासमें श्रीमहादेव की पूजा बिल्व पत्रादि द्वारा प्रीतिपूर्वक अपने आप करें या दूसरे से करवायें ॥१४९॥

In the month of Shrāvan, they shall do *poojan* of Mahādev (Lord Shiv) with reverence and using Bilva leaves by all means. This may be done personally or by having someone else do such *poojan* on their behalf. ||149||

स्वाचार्यान्न ऋणं ग्राह्यं श्रीकृष्णस्य च मन्दिरात् ।
ताभ्यां स्वव्यवहारार्थं पात्रभूषांशुकादि च ॥१५०॥

श्रीकृष्णगुरुसाधूनां दर्शनार्थं गतौ पथि ।
तत्स्थानेषु च न ग्राह्यं परान्नं निजपुण्यहृत् ॥१५१॥

अपने आचार्य तथा श्रीकृष्ण भगवान के मंदिर से कर्जा न निकालें तथा अपने आचार्य तथा श्रीकृष्ण के मन्दिर से अपने व्यवहार के लिए बर्तन, जेवर और वस्त्रादि वस्तुएँ माँग कर न लावें ॥१५०॥

श्रीकृष्ण भगवान तथा अपने गुरु तथा साधु इनके दर्शन करने के लिए जाते हुए मार्ग में पराया अन्न न खायें तथा श्रीकृष्ण भगवान और अपने गुरु या साधु तथा उनके स्थानो (निवास) में भी पराया अन्न न खायें। क्यों की पराया अन्न अपने पुण्य को हर लेता है। इसलिए अपना खर्च करके खावें ॥१५१॥

They shall never borrow money from their Ācharya or from the temple of Shree Krishna Bhagwān, nor shall they borrow any utensils, ornaments, garments or other such articles for their personal use from them. ||150||

While going for the *darshan* of Shri Krishna Bhagwān, guru and *sādhus*, they shall not accept food offered by others, either along the way or at those places, because eating others' food deprives them of religious merits. Therefore, they should spend their own money for food. ||151||

प्रतिज्ञातं धनं देयं यत्स्यात्तत् कर्मकारिणे ।
न गोप्यमृणशुद्ध्यादि व्यवहार्यं न दुर्जनैः ॥१५२॥

अपने काम-काज के लिए बुलाए गए मजदूर को जितना धन अथवा धान्य देने को कहा हो तदनुसार ही दें परन्तु उससे कम न दें और कोई अपने पास कर्ज माँगता हो और वह कर्ज वापस दे दिया हो तो उस बात को गुप्त न रखें तथा अपना वंश और कन्यादान गुप्त न रखें तथा दुष्टजनों के साथ व्यवहार न करें ॥१५२॥

For one's own work, when laborers are hired, they must be paid the agreed upon wages or grains, but not less. If one has borrowed

money from someone, and the money has been returned, that fact should not be kept private. And one's own family lineage, matrimony of their daughter, etc. should not be kept private either. And one shall never deal or associate with wicked people. ||152||

दुष्कालस्य रिपूणां वा नृपस्योपद्रवेण वा ।
लज्जाधनप्राणनाशः प्राप्तः स्याद्यत्र सर्वथा ॥१५३॥
मूलदेशोऽपि स स्वेषां सद्य एव विचक्षणैः ।
त्याज्यो मदाश्रितैः स्थेयं गत्वा देशान्तरं सुखम् ॥१५४॥

जिस जगह हम रहते है वहा कोई कठीन दुष्काल, शत्रु तथा राजा के उपद्रव से सभी प्रकारसे अपनी लज्जा या धन का नाश हो या प्राण का नाश होता हो ॥१५३॥

वह अपनी मूल जमींदारी तथा वतन का गाँव हो तो भी उसका हमारे विवेकी सद्गृहस्थ तत्काल त्याग करें तथा जहाँ उपद्रव न हो ऐसे दूसरे देश में जाकर सुखपूर्वक रहें ॥१५४॥

At the place of residence, When honor, wealth or life is being lost in any way due to distress resulting from some terrible time, enemies or the ruler, ||153||

My wise *satsangi* householders shall immediately leave such place, even if the place is received as gift (*garās*) and is his ancestral village. They shall go to another place and happily get settled where there is no distress. ||154||

आढ्यैस्तु गृहिभिः कार्या अहिंसा वैष्णवा मखाः ।
तीर्थेषु पर्वसु तथा भोज्या विप्राश्च साधवः ॥१५५॥
महोत्सवा भगवतः कर्तव्या मन्दिरेषु तैः ।
देयानि पात्रविप्रेभ्यो दानानि विविधानि च ॥१५६॥

धनाढ्य गृहस्थ सत्संगी हों वे हिंसा रहित विष्णु सम्बन्धी यज्ञ करें तथा तीर्थ में और द्वादशी आदि पर्व पर ब्राह्मण तथा साधुओं को भोजन करायें ॥१५५॥

और भगवान के मंदिर में बड़े उत्सव करवाएं तथा सुपात्र ब्राह्मण को विविध प्रकार के दान देवें ॥१५६॥

Those householder satsangis who are wealthy should perform non-violent *yagnas* related to Vishnu and should provide meals to deserving *brāhmins* and *sādhus* in places of pilgrimages and on auspicious days like the twelfth day of each half of the lunar month. ||155|| The householder *satsangis* who are wealthy should perform grand celebrations at the temple of God and give various kinds of donations to deserving *brahmins.* ||156||

राज्ञः विशेषधर्माः

मदाश्रितैर्नृपैर्धर्मशास्त्रामाश्रित्य चाखिलाः ।
प्रजाः स्वाः पुत्रवत्पाल्या धर्मः स्थाप्यो धरातले ॥१५७॥

राजाके विशेष धर्म

मेरे आश्रित जो सत्संगी राजा हैं वें धर्मशास्त्र के अनुसार अपने पुत्र के समान प्रजा का पालन करें तथा पृथ्वी पर धर्म की स्थापना करें ॥१५७॥

Special *dharmas* of King

The rulers who are my followers should care for their people according to the dharma *shāstras* - just as they would care for their own children. They should establish the rule of dharma on Earth ||157||

राज्याङ्गोपायषड्वर्गा ज्ञेयास्तीर्थानि चाञ्जसा ।
व्यवहारविदः सभ्या दण्ड्यादण्ड्याश्च लक्षणैः ॥१५८॥

वह राजा, राज्य के सात अंग चार उपाय एवं छ गुणों को लक्षण पूर्वक यथार्थ रूप से जानें और गुप्तचर भेजने के स्थान तथा व्यवहार को जाननेवाले सभासद तथा दण्ड देने योग्य और दंड नहीं देने योग्य जो मनुष्य हों उन्हें लक्षणों से अच्छी प्रकार से पहचानें ॥१५८॥

The rulers should clearly understand the characteristics of the seven aspects of governing (namely, the duties and qualities of the: king, ministers, friends, citizens, queen, prince and army), four aspects of conflict resolution

[namely: *sām* (negotiation), *dām* (suppression), *dand* (punishment) and *bhed* (to divide)], six qualities of diplomacy and the important places to send spies and courtiers knowledgeable in social affairs along with their characteristics, people who deserve to be punished and not to be punished – all these should be clearly understood by their qualities. ||158||

सधवायाः विशेषधर्माः

सभर्तृकाभिर्नारीभिः सेव्यः स्वपतिरीशवत् ।
अन्धो रोगी दरिद्रो वा षण्ढो वाच्यं न दुर्वचः ॥१५९॥

सधवाके विशेषधर्म

हमारे आश्रित जो सौभाग्यवती स्त्रियाँ यदि उनका पति अंधा हो, रोगी हो, दरिद्र हो, नपुंसक हो तो भी उसकी ईश्वर की भाँति सेवा करें तथा पति से कटु वचन न बोलें ॥१५९॥

Special *dharmas* of married women

(Now I am stating additional *dharmas* for married women) Married women who are my followers shall serve their husband just as they would serve God even if he were blind, ill, poor, or impotent and for shall not utter a bitter word for her husband. ||159||

रूपयौवनयुक्तस्य गुणिनोऽन्यनरस्य तु ।
प्रसङ्गो नैव कर्तव्यस्ताभिः साहजिकोऽपि च ॥१६०॥

सौभाग्यवती स्त्रियाँ रूप, यौवन और गुणयुक्त ऐसे अन्य पुरुष का प्रसंग सहज स्वभाव से भी न करें ॥१६०॥

And the married women shall not associate, even casually, with any other man who is handsome, young and virtuous. ||160||

नरेक्ष्यनाभ्यूरुकुचाऽनुत्तरीया च नो भवेत् ।
साध्वी स्त्री न च भण्डेक्षा न निर्लज्जादिसङ्गिनी ॥१६१॥

पतिव्रता ऐसी जो सौभाग्यवती स्त्रियाँ वे अपनी नाभि, जंघा और वक्षःस्थल अन्य पुरुष देखें उस प्रकार का वर्तन न करें और उत्तरीय वस्त्र रहित खुले शरीर न रहें तथा भांडलीला आदि देखने न जाएँ तथा जो निर्लज्ज, स्वैरिणी, कामिनी और पुंश्चली स्त्रियाँ हों उनका संग न करें ॥१६१॥

All chaste married women shall not behave in a way so that their navel, breast or thigh is visible to other men and never remain bare without clothes covering her body. They shall not go to watch vulgar shows and shall not associate with women who are shameless, lustful, self-willed and immoral. ||161||

भूषासदंशुकधृतिः परगेहोपवेशनम् ।
त्याज्यं हास्यादि च स्त्रीभिः पत्यौ देशान्तरं गते ॥१६२॥

सौभाग्यवती स्त्रियाँ अपना पति परदेश गया हो तो आभूषण धारण न करें, सुन्दर वस्त्र न पहनें और दूसरे के घर बैठने न जायें तथा हास्य विनोदादि का त्याग करें ॥१६२॥

When their husbands are away at a distant place (for an extended period), these married women shall not wear ornaments or fine clothes; they should not visit other's houses and shall give up humor, laughter, etc. ||162||

विधवाया: विशेषधर्मा:

विधवाभिस्तु योषाभिः सेव्यः पतिधिया हरिः ।
आज्ञायां पितृपुत्रादेर्वृत्यं स्वातन्त्र्यतो न तु ॥१६३॥

विधवाके विशेषधर्म

अब विधवा स्त्रियाँ के विशेषधर्म कहते है । हमारे आश्रित जो विधवा स्त्रियाँ है वे पतिबुद्धि से श्रीकृष्ण भगवान का सेवन करें और अपने पिता पुत्रादि सम्बन्धियों की आज्ञानुसार बर्ते परन्तु स्वतन्त्र रूप से बर्ताव न करें ॥१६३॥

Special *dharmas* of widow

(Now I am stating additional *dharmas* for widowed women) Widows shall worship and serve Shri Krishna Bhagwān as if he were

their husband and shall follow the instructions of their relatives such as their father, sons, etc., but should never act independently. ||163||

स्वासन्नसम्बन्धहीना नराः स्पृश्या न कर्हिचत् ।
तरुणैस्तैश्च तारुण्ये भाष्यं नावश्यकं विना ॥१६४॥

विधवा स्त्रियाँ अपने समीप सम्बन्ध रहित जो पुरुष हों, उनका स्पर्श कभी भी न करें और अपनी युवावस्था में आवश्यक कार्य बिना समीप संबंध वाले युवान पुरुषों के साथ कभी भी सम्भाषण न करें ॥१६४॥

These widow women shall never touch any men who are not a close relative of theirs and in their young age, should never speak to young men who are not their close relatives except for an absolutely necessary task. ||164||

स्तनन्धयस्य नुः स्पर्शे न दोषोऽस्ति पशोरिव ।
आवश्यके च वृद्धस्य स्पर्शे तेन च भाषणे ॥१६५॥

स्तनपान करते हुए बालक का स्पर्श हो तो जैसे पशु को छूने में दोष नहीं उसी प्रकार उसका दोष नहीं और किसी

वृद्ध पुरुष को किसी आवश्यक कार्य से छूना पड़े या बोलना पडे तो उसमें दोष नहीं ।।१६५।।

There is no sin in touching a suckling boy just as there is no sin in touching an animal. And there is no harm in touching or talking to an old man, but when sheer necessity arises. ||165||

विद्याऽनासन्नसंबन्धात्ताभिः पाठ्या न काऽपि नुः ।
व्रतोपवासैः कर्तव्यो मुहुर्देहदमस्तथा ।।१६६।।

वे विधवा स्त्रियाँ अपने समीप सम्बन्धी न हों ऐसे पुरुष से कोई भी विद्या न शीखें और व्रत उपवास से बारबार अपने देह का दमन करें ।।१६६।।

Widows shall not learn any kind of lessons or training from any man who is not a close relative of hers. They shall perform austerities by frequent observances of *vrats* and fasts to control her body and senses. ||166||

धनं च धर्मकार्येऽपि स्वनिर्वाहोपयोगि यत् ।
देयं ताभिर्न तत् क्वापि देयं चेदधिकं तदा ॥१६७॥

वे विधवा स्त्रियाँ अपने घर में जीवन पर्यन्त देह निर्वाह हो उतना ही धन हो तो वह धन धर्मकार्य में भी न दें । यदि उससे अधिक हो तो देवें ॥१६७॥

And those widows shall not donate money, even for religious purposes, if their financial means are only enough to maintain their body for the rest of their life. They may donate if they have surplus. ||167||

कार्यश्च सकृदाहारस्ताभिः स्वापस्तु भूतले ।
मैथुनासक्तयोर्वीक्षा क्वापि कार्या न देहिनोः ॥१६८॥

वे विधवा स्त्रियाँ एक बार ही भोजन करें और पृथ्वी पर सोवें तथा मैथुनासक्त जो पशु-पक्षी आदि जीव-प्राणी हैं उन्हें जान-बूझकर कभी न देखें ॥१६८॥

Widows shall eat one meal per day and sleep on the floor. They should not look at animals, birds or any living species that are engaged in sexual intercourse. ||168||

वेषो न धार्यस्ताभिश्च सुवासिन्याः स्त्रियास्तथा ।
न्यासिन्या वीतरागाया विकृतश्च न कर्हिचित् ॥१६९॥

वे विधवा स्त्रियाँ सौभाग्यवती स्त्री जैसा वेश धारण न करें तथा संन्यासिनी और वैरागिनी जैसा वेश धारण न करें तथा अपने देश, कुल और आचार के विरूद्ध जो वेश हो वह कभी भी धारण न करें ॥१६९॥

Widows shall never dress up like married women, *sanyāsinis* and ascetic. Also, they shall not dress up in a way that is against their region, ancestral tradition or good manners. ||169||

सङ्गो न गर्भपातिन्याः स्पर्शः कार्यश्च योषितः ।
शृङ्गारवार्ता न नृणां कार्याः श्रव्या न वै क्वचित् ॥१७०॥

गर्भपातिनी स्त्री का संग न करें तथा स्पर्श भी न करें और पुरुष के शृंगार रस सम्बन्धी वार्ता कभी न करें और न सुनें ॥१७०॥

They shall not associate with women who practice abortion and they should not

even touch those women. They shall not talk nor listen to amorous talks about men. ||170||

निजसम्बन्धिभिरपि तारुण्ये तरुणैर्नरैः ।
साकं रहसि न स्थेयं ताभिरापदमन्तरा ॥१७१॥

युवावस्था में विधवा स्त्रियाँ युवावस्थायुक्त अपने सम्बन्धी पुरुष के साथ भी एकान्त स्थान में आपत्काल के बिना न रहें ॥१७१॥

And widows who are young of age shall not stay alone in a secluded place with young men, even if they are their close relative, except during an acute emergency. ||171||

न होलाखेलनं कार्यं न भूषादेश्च धारणम् ।
न धातुसूत्रयुक्सूक्ष्मवस्त्रादेरपि कर्हिचित् ॥१७२॥

होली का खेल न खेलें और आभूषणादि धारण न करें तथा सुवर्ण आदि धातु के तारों से युक्त सूक्ष्म वस्त्र भी धारण न करें ॥१७२॥

They shall never take part in playful activities on the occasion of Holi, shall not wear

ornaments, etc. and shall not wear fine or transparent clothes interwoven with metallic threads made of gold, etc. ||172||

सधवाविधवाभिश्च न स्नाातव्यं निरम्बरम् ।
स्वरजोदर्शनं स्त्रीभिर्गोपनीयं न सर्वथा ॥१७३॥
मनुष्यं चांशुकादीनि नारी क्वापी रजस्वला ।
दिनत्रयं स्पृशेन्नैव स्नात्वा तुर्येऽह्नि सा स्पृशेत् ॥१७४॥

सौभाग्यवती और विधवा स्त्रियाँ वस्त्र पहने बिना स्नान न करें । अपने रजस्वला (मासिक धर्म) स्थिति को किसी प्रकार गुप्त न रखें ॥१७३॥

रजस्वलायुक्त सौभाग्यशालिनी तथा विधवा स्त्रियाँ तीन दिन तक किसी मनुष्य या वस्त्रादि को छुये नहीं । चौथे दिन स्नान करके छुयें । (इन सब धर्मो का आचार्य और उनकी पत्नीयाँ भी पालन करें क्योंकि वे भी गृहस्थाश्रमी हैं) ॥१७४॥

All females, Married women and widows (including virgins also), shall never bath with their clothes off nor shall they conceal their menstrual period in any way. ||173||

During their menstrual period, married women and widows shall not touch any person and clothes, etc. for three days. On the fourth day, after taking a bath, they may touch them. (Thus I stated additional *dharmas* for householder male and female followers. *Dharmvanshi Āchāryas* and their wives shll also observe all these *dharmas* as they are householders too.) ||174||

ब्रह्मचारिणः विशेषधर्माः

नैष्ठिकव्रतवन्तो ये वर्णिनो मदुपाश्रयाः ।
तैः स्पृश्या स्त्रियो भाष्या न च वीक्ष्याश्च ता धिया ॥१७५॥

ब्रह्मचारीके विशेषधर्म

अब नैष्ठिक ब्रह्मचारीके विशेषधर्म कहते है । हमारे आश्रित नैष्ठिक ब्रह्मचारी वे स्त्री मात्र का स्पर्श न करें और स्त्रियों के साथ बोले नहीं और जान बूझकर उनके सन्मुख देखें नहीं ॥१७५॥

Special *dharmas* of *brahmchari*

Now I am stating additional *dharmas* for *naishtik brahmachāri*. My disciples who are the *naishthik brahmachāries* must not touch any girls or women, must not talk with them knowingly, they should not look towards them. ||175||

तासां वार्ता न कर्तव्या न श्रव्याश्च कदाचन ।
तत्पादचारस्थानेषु न च स्नानादिकाः क्रियाः ।।१७६।।

स्त्रियों की बात कभी न करें तथा न सुनें और जिस स्थान में स्त्रियों का पदसंचार हो, उस स्थान में स्नानादि क्रिया करने न जावें ।।१७६।।

They shall not ever talk or listen about females and shall not go to places for bathing, etc., if those places are normally frequented by females. ||176||

देवताप्रतिमां हित्वा लेख्या काष्ठादिजापि वा ।
न योषित्प्रतिमा स्पृश्या न वीक्ष्या बुद्धिपूर्वकम् ।।१७७।।

देवता की प्रतिमा के सिवा दूसरी स्त्री की प्रतिमा चित्र की और काष्ठ आदि की भी हो तो उसका स्पर्श न करें और जानबूझकर प्रतिमा को भी न देखें ।।१७७।।

They shall not touch or even knowingly look at the images of women, like drawings, paintings or statues of women made of wood, etc. unless they are the images of goddesses. ||177||

न स्त्रीप्रतिकृतिः कार्या न स्पृश्यं योषितोंऽशुकम्।
न वीक्ष्यं मैथुनपरं प्राणिमात्रं च तैर्धिया ।।१७८।।

नैष्ठिक ब्रह्मचारी स्त्री की प्रतिमा को न बनावें तथा स्त्री के शरीर पर धारण किये वस्त्र को न छुयें तथा मैथुनासक्त पशु–पक्षी आदि प्राणीमात्र को जानबुझकर न देखें ।।१७८।।

And those *naishthik brahmachāries* shall not make an image of women and shall not touch any clothes that were worn by a woman. They should not knowingly watch any animals,

birds and any living species that are engaged in sexual intercourse. ||178||

न स्पृश्यो नेक्षणीयश्च नारीवेषधरः पुमान् ।
न कार्यं स्त्रीः समुद्दिश्य भगवद्गुणकीर्त्तनम् ॥१७९॥

स्त्री के वेश को धारण करने वाले पुरुष का स्पर्श न करें और उसे देखें नहीं और उसके साथ बोलें नहीं तथा स्त्रियों को सम्बोधित करके भगवान की कथा-या कीर्तन भी न करें ॥१७९॥

They shall not touch, look at, nor speak to a man who assumes the guise of a woman. They shall not deliver God related discourses and singing of devotional songs directed at females ||179||

ब्रह्मचर्यव्रतत्यागपरं वाक्यं गुरोरपि ।
तैर्न मान्यं सदा स्थेयं धीरैस्तुष्टैरमानिभिः ॥१८०॥

वे नैष्ठिक ब्रह्मचारी अपने ब्रह्मचर्य व्रत का भंग हो ऐसा वचन अपने गुरु का भी न मानें तथा निरन्तर धैर्यवान रहें और सन्तोषयुक्त रहें तथा मान-अभिमान रहित रहें ॥१८०॥

The *naishthik brahmchāris* shall not obey any command that might break their vow of celibacy, even if it is given by their Guru. *Brahmachāris* should always remain patient, content and free from ego. ||180||

स्वातिनैकट्यमायान्ती प्रसभं वनिता तु या ।
निवारणीया सा भाष्य तिरस्कृत्यापि वा द्रुतम् ।।१८१।।

बलपूर्वक अपने अतिशय समीप आने वाली स्त्री को कहकर अथवा तिरस्कार करके भी तुरंत लौटा दें किन्तु समीप आने न दें ।।१८१।।

If a female forcefully tries to come very close to them, they must stop her immediately either by talking to her or by even expressing hatred, but should not let her come close. ||181||

प्राणापद्युपपन्नायां स्त्रीणां स्वेषां च वा क्वचित् ।
तदा स्पृष्ट्वापि तद्रक्षा कार्या संभाष्य ताश्च वा ।।१८२।।

यदि कभी स्त्री का या अपना प्राण जाने जैसा आपत्काल आ जाए तो उन स्त्रियों को छूकर या उनके साथ बोलकर भी उन स्त्रियों की और अपनी रक्षा करें ॥१८२॥

And if any adverse time arises where the lives of women or their own lives are in danger, in such circumstances, they shall protect the women and themselves, even by touching or talking to them. ||182||

तैलाभ्यङ्गो न कर्त्तव्यो न धार्यं चायुधं तथा ।
वेषो न विकृतो धार्यो जेतव्या रसना च तैः ॥१८३॥

वह नैष्ठिक ब्रह्मचारी अपने शरीर पर तैलमर्दन न करें तथा आयुद्ध धारण न करें। भयंकर वेश भी धारण न करें तथा रसना इन्द्रिय को जीतें ॥१८३॥

The *naishthik brahmchāris* shall never massage their body with oil. They shall never dress up in a way that would provoke fear or would be unpleasant to see nor carry weapons. They shall conquer their sense of taste. ||183||

परिवेषणकर्त्री स्याद्यत्र स्त्री विप्रवेश्मनि ।
न गम्यं तत्र भिक्षार्थं गन्तव्यमितरत्र तु ॥१८४॥

जिस ब्राह्मण के घर में स्त्री परोसने वाली हो उस घर में भिक्षा के लिए न जाएँ और जहाँ पुरुष परोसनेवाला हो वहाँ जाएँ ॥१८४॥

They shall not go for alms to a *brāhmin*'s house where food is served by a woman. Instead, go to a place where a male is serving food. ||184||

अभ्यासो वेदशास्त्राणां कार्यश्च गुरुसेवनम् ।
वर्ज्यः स्त्रीणामिव स्त्रैणपुंसां सङ्गश्च तैः सदा ॥१८५॥

वे नैष्ठिक ब्रह्मचारी वेद शास्त्र का अभ्यास करें और गुरु की सेवा करें तथा स्त्रियों की तरह स्त्रैण पुरुष का संग सर्वकाल में त्याग करें ॥१८५॥

And those *Naisthisk Brahmchāries*, shall study the Ved *shāhstras* (Vedas and other holy *shāstras*) and shall serve their Guru. Associating

with effeminate males shall be avoided at all times, just like association with women. ||185||

चर्मवारि न वै पेयं जात्या विप्रेण केनचित् ।
पलाण्डुलशुनाद्यं च तेन भक्ष्यं न सर्वथा ।।१८६।।

जो जाति से ब्राह्मण हो वह चमड़े के पात्र से निकाले हुए जल को न पिएँ। प्याज और लसुन आदि अभक्ष्य चीजें कभी न खाएँ।।१८६।।

And those who are *brāhmin* by caste shall not drink water from a leather container. And items such as onion and garlic, which are prohibited articles for consumption, shall not be eaten in any way by those who are *brāhmin* by caste. ||186||

स्नानं सन्ध्यां च गायत्रीजपं श्रीविष्णुपूजनम् ।
अकृत्वा वैश्वदेवं च कर्तव्यं नैव भोजनम् ।।१८७।।

जो ब्राह्मण हो वह स्नान, सन्ध्या, गायत्री का जाप, श्रीविष्णु की पूजा तथा वैश्वदेव किए बिना कभी भी भोजन न

करें । इस तरह नैष्ठिक ब्रह्मचारीके विशेषधर्म कहे गये ॥१८७॥

brāhmins must not take their meals without completing these items: taking a bath, offering *sandhyā vandan* (special prayers), chanting *Gāyatri mantra*, worshipping (*poojā*) Shri Vishnu and performing the Vaishvadev Yagna (thus I have stated additional dharma of *naishthik brahmchari*). ||187||

त्यागिनः विशेषधर्माः

साधवो येऽथ सर्वैर्नैष्ठिकब्रह्मचारिवत् ।
स्त्रीस्त्रैणसङ्गादि वर्ज्यं जेतव्याश्चान्तरारयः ॥१८८॥

साधुके विशेषधर्म

अब साधु के विशेषधर्म कहते है । हमारे आश्रित सभी साधु नैष्ठिक ब्रह्मचारी की तरह स्त्रियों के दर्शन भाषणादि प्रसंग का त्याग करें तथा स्त्रैण पुरुष के प्रसंगादि का

त्याग करें और अन्तःशत्रु–काम, क्रोध, लोभ तथा मान आदि जीतें ॥१८८॥

Special *dharmas* of Saints

Now, I am stating additional *dharma* of *sādhu*. All *sādhus* who are my followers shall give up seeing or listening to women. Also, they shall renounce the company, etc. of effeminate males, as like the *naishtik brahmachāris* should. They should eliminate their inner enemies (basic instincts), such as lust, anger, greed, ego, envy, etc. ||188||

सर्वेन्द्रियाणि जेयानि रसना तु विशेषतः ।
न द्रव्यसङ्ग्रहः कार्यः कारणीयो न केनचित् ॥१८९॥

सभी जो इन्द्रियाँ है उन्हे जीतें तथा रसना इन्द्रिय को तो विशेष रूपसे जीतें तथा द्रव्य का संग्रह अपने आप न करें। और अन्य किसी के पास न करायें ॥१८९॥

The *sādhus* must control all their senses, especially that of taste. They shall not possess

wealth for themselves, or make others do so on their behalf. ||189||

न्यासो रक्ष्यो न कस्यापि धैर्यं त्याज्यं न कर्हिचित् ।
न प्रवेशयितव्या च स्वावासे स्त्री कदाचन ॥१९०॥

किसी की धरोहर न रखें तथा कभी धैर्य का त्याग न करें तथा अपने निवासस्थान में कभी भी स्त्री का प्रवेश न होने दें ॥१९०॥

They should not hold valuable things or money as deposits of anybody. They should never lose their patience and shall never allow any woman to enter their place of residence. ||190||

न च सङ्गं विना रात्रौ चलितव्यमनापदि ।
एकाकिभिर्न गन्तव्यं तथा क्वापि विनापदम् ॥१९१॥

आपत्काल के बिना रात्रि के समय संगति बिना साधु कही न चलें तथा आपत्काल के बिना कभी अकेले न जायें ॥१९१॥

Except in emergencies, a *sādhu* shall never travel without the company of fellow travelers during the night nor should he travel alone at any other time except for an emergency. ||191||

अनर्घ्यं चित्रितं वासः कुसुम्भाद्यैश्च रञ्जितम् ।
न धार्यं च महावस्त्रं प्राप्तमन्येच्छयापि तत् ॥१९२॥

जो वस्त्र बहुत कीमती हो तथा चित्र-विचित्र हो या कसुंबल आदि रंग से रंगा हुआ हो तथा शाल-दुशाला हो या किसी दूसरे की इच्छा से प्राप्त हुआ हो तो भी वह वस्त्र पहने या ओढे नहीं ॥१९२॥

They shall never wear or use clothes that are costly, luxurious, with various designs, dyed with colors like *kasumbh*, or *shawls* even if it is obtained by another's wish. ||192||

भिक्षां सभां विना नैव गन्तव्यं गृहिणो गृहम् ।
व्यर्थः कालो न नेतव्यो भक्तिं भगवतो विना ॥१९३॥

भिक्षा और सभा प्रसंग इन दो कार्यों के सिवा गृहस्थ

के घर न जावें तथा भगवान की भक्ति करे बिना व्यर्थ समय न बितावें, निरंतर भक्ति करके हि समय व्यतित करें। ॥१९३॥

They shall never go to the residence of a householder except to collect alms or for religious assemblies. Do not allow the time to pass without practicing the nine types of devotion of God. They should continuously utilize their time by doing devotional activities. ||193||

पुमानेव भवेद्यत्र पक्वान्नपरिवेषणः ।
ईक्षणादि भवेन्नैव यत्र स्त्रीणां च सर्वथा ॥१९४॥
तत्र गृहिगृहे भोक्तुं गन्तव्यं साधुभिर्मम ।
अन्यथामान्नमर्थित्वा पाकः कार्यः स्वयं च तैः ॥१९५॥

जिस गृहस्थ के घर पके हुए अन्न को परोसने वाला पुरुष ही हो तथा स्त्रियों का दर्शनादि प्रसंग किसी भी प्रकार न हो, ॥१९४॥

ऐसा जो गृहस्थी का घर हो उस घर पर ही हमारे साधु भोजन के लिए जावें तथा कहे अनुसार घर न हो तो कच्चा

अन्न माँगकर हाथ से रसोई करें तथा भगवान को नैवेद्य समर्पण करके भोजन करें ॥१९५॥

At the place of a householder where only men serve cooked food and women are not visible at all, ||194||

To such a householder's residence, My *sādhus* shall go for a meal. If this is not possible as stated above, they shall ask for raw provisions and cook their food themselves and partake it after offering it to God. ||195||

आर्षभो भरतः पूर्वं जडविप्रो यथा भुवि ।
अवर्ततात्र परमहंसैर्वृत्यं तथैव तैः ॥१९६॥

ऋषभदेव भगवान के पुत्र भरतजी जड़ ब्राह्मण बनकर जैसा बर्ताव करते थे उसी तरह हमारे परमहंस बर्ताव करें ॥१९६॥

My *paramhans sādhus* must behave in a similar manner as Bharatji behaved in the past. Bharatji was the son of Bhagwān Rishabhdev

and he behaved as a *Jad brāhmin* (detached *brāhmin*) on this Earth. ||196||

वर्णिभिः साधुभिश्चैतैर्वर्जनीयं प्रयत्नतः ।
ताम्बूलस्याहिफेनस्य तमालादेश्च भक्षणम् ॥१९७॥

नैष्ठिक ब्रह्मचारी तथा साधुजन ताम्बूल तथा अफीम और तम्बाकू इत्यादि के भक्षण का प्रयत्नपूर्वक त्याग करें ॥१९७॥

All *naisthik brahmachāris* and *sādhus* shall consciously avoid taking betel leaves, tobacco, opium and any other intoxicating substances. ||197||

संस्कारेषु न भोक्तव्यं गर्भाधानमुखेषु तैः ।
प्रेतश्राद्धेषु सर्वेषु श्राद्धे च द्वादशाहिके ॥१९८॥

वे नैष्ठिक ब्रह्मचारी तथा साधु गर्भधानादि संस्कार के निमित्त भोजन न करें तथा एकादशाह पर्यन्त जो प्रेतश्राद्ध उस निमित्त भोजन न करें और द्वादशाह श्राद्ध निमित्त भोजन न करें ॥१९८॥

The *naisthik brahmchāris* and *sādhus* must never take meals offered for the occasion of *sanskārs* such as the conception of a child, rites of obsequies on the twelfth day after the death of a person, *pret shrāddh,* etc. ||198||

दिवास्वापो न कर्तव्यो रोगाद्यापदमन्तरा ।
ग्राम्यवार्ता न कार्या च न श्रव्या बुद्धिपूर्वकम् ॥१९९॥

रोगादि आपत्तिकाल के बिना दिन में शयन न करें और ग्राम्यवार्ता न करें तथा ग्राम्यवार्ता जानबूझकर सुनें नहीं ॥१९९॥

They should not sleep during the day except in adverse times such as sickness. They should neither speak nor deliberately listen to worldly talk. ||199||

स्वप्यं न तैश्च खट्वायां विना रोगादिमापदम् ।
निश्छद्म वर्तितव्यं च साधूनामग्रतः सदा ॥२००॥

नैष्ठिक ब्रह्मचारी तथा साधु रोगादि आपत्काल के बिना खाट पर सोएँ नहीं तथा साधु के सामने तो निरंतर निष्कपट भाव से बर्ताव करें ॥२००॥

All *naisthik brahmachāris* and *sādhus* shall not rest on a bed except in adverse times such as sickness. They shall always be candid with other *sādhus*. ||200||

गालिदानं ताडनं च कृतं कुमतिभिर्जनैः ।
क्षन्तव्यमेव सर्वेषां चिन्तनीयं हितं च तैः ॥२०१॥

वे नैष्ठिक ब्रह्मचारी तथा साधु यदि कोई कुमतिवाला दुष्टजन अपने को गाली दे या मारे तो सहन ही करें । परन्तु उनको सामने गाली न दें और मारे नहीं । उसका जैसे हित हो वैसा ही मनमें चिन्तवन करें किन्तु उनका बुरा हो ऐसा तो संकल्प भी न करें ॥२०१॥

When an evil minded, malicious person abuses or beats *naishthik brahmchāries* or *sādhus*, they must tolerate that misbehavior and forgive them, but shall not abuse or beat the person in return and shall wish for their well-being but should not even wish in mind bad for them. ||201||

दूतकर्म न कर्तव्यं पैशुनं चारकर्म च ।
देहेऽहन्ता च ममता न कार्या स्वजनादिषु ॥२०२॥

किसी के लिए दूत कर्म न करें तथा चुगलखोरी न करें और किसी के चारचक्षु न बनें तथा देह में अहंबुद्धि न रखें और स्वजनादि में ममता न करें ॥२०२॥

They shall not act as agents for others nor shall they do back-biting nor spy on people. One shall not have the illusion that one's body is the self. And shall not have my-ness towards relatives. (Thus, I have stated additional *dharma* of *sadhu*)||202||

इति सङ्क्षेपतो धर्माः सर्वेषां लिखिता मया ।
साम्प्रदायिकग्रन्थेभ्यो ज्ञेय एषां तु विस्तरः ॥२०३॥

हमारे आश्रित सभी सत्संगी पुरुष और स्त्रियाँ का जो सामान्य और विशेष धर्म हमने संक्षेप में इस प्रकार लिखे हैं और इस धर्म का जो विस्तार है वह हमारे सम्प्रदाय के ग्रन्थों द्वारा जानें ॥२०३॥

Thus, for my *satsangi* followers, male and female, I have written in brief, the common dharma and additional dharma (for each specific group). Details of these *dharmas* should be learned from other *Shāstras* of our *sampradāya.* ||203||

सच्छास्त्राणां समुद्धृत्य सर्वेषां सारमात्मना ।
पत्रीयं लिखिता नृणामभीष्टफलदायिनी ॥२०४॥

सभी सत्शास्त्रों का सार हमने हमारी बुद्धि से उद्धृत करके यह शिक्षापत्री लिखी है वह कैसी है ? सभी मनुष्य मात्र को अभीष्ट फल देने वाली है ॥२०४॥

I have written this SHIKSHĀPATRI after extracting the essence of all *shāstras* as per my intellect. If asked how it is? Then, it has ability to deliver desired results to every person (who follows the SHIKSHĀPATRI). ||204||

इमामेव ततो नित्यमनुसृत्य ममाश्रितैः ।
यतात्मभिर्वर्तव्यं न तु स्वैरं कदाचन ॥२०५॥

इस हेतु के लिए हमारे आश्रित सभी सत्संगी सावधानी से नित्य प्रति इस शिक्षापत्री के अनुसार वर्तन करें और अपने मन की इच्छानुसार तो कभी न बरतें ॥२०५॥

Therefore, all My disciples must always follow this SHIKSHĀPATRI vigilantly, but shall never behave according to their own will. ||205||

वर्तिष्यन्ते य इत्थं हि पुरुषा योषितस्तथा ।
ते धर्मादिचतुर्वर्गसिद्धिं प्राप्स्यन्ति निश्चितम् ॥२०६॥

हमारे आश्रित पुरुष और स्त्रियाँ जो इस शिक्षापत्री के अनुसार आचरण करेंगे तो वे धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष इन चारों पुरुषार्थो की सिद्धि को निश्चय प्राप्त करेंगे ॥२०६॥

Followers of mine, men and women who will live in accordance with this SHIKSHĀPATRI shall definitely attain the four *purushārths*: *dharma, artha, kāma* and *moksha*. ||206||

नेत्थं य आचरिष्यन्ति ते त्वस्मत्सम्प्रदायतः ।
बहिर्भूता इति ज्ञेयं स्त्रीपुंसैः साम्प्रदायिकैः ॥२०७॥

जो स्त्रियाँ या पुरुष इस शिक्षापत्री के अनुसार बर्ताव नहीं करते हैं वे लोग हमारे सम्प्रदाय से बाहर हैं ऐसा हमारे सम्प्रदायवाले स्त्री-पुरुष समझें ॥२०७॥

My male and female followers should know that those men and women who do not follow this SHIKSHĀPATRI are outsider of our Holy Fellowship. ||207||

शिक्षापत्र्याः प्रतिदिनं पाठोऽस्या मदुपाश्रितैः ।
कर्तव्योऽनक्षरज्ञैस्तु श्रवणं कार्यमादरात् ॥२०८॥
वक्त्रभावे तु पूजैव कार्याऽस्याः प्रतिवासरम् ।
मद्रूपमिति मद्वाणी मान्येयं परमादरात् ॥२०९॥

हमारे आश्रित सत्संगी इस शिक्षापत्री का नित्यप्रति पाठ करें और जिसे पढ़ना न आता हो, वे आदर भाव से इस शिक्षापत्री का श्रवण करें ॥२०८॥

और इस शिक्षापत्री को पढ़कर सुनाने वाला कोई न हो तब नित्य प्रति इसकी पूजा करें। हमारी वाणी हमारा स्वरूप है ऐसा समझकर परम आदर से इसे मानें ॥२०९॥

My disciples shall read this whole

SHIKSHĀPATRI daily, and those who are illiterate shall listen to it with reverence. ||208||

If there is no one around to read aloud this SHIKSHĀPATRI, they shall worship it daily and with great reverence, shall regard My words as the personified form of My Divine Self. ||209||

युक्ताय सम्पदा दैव्या दातव्येयं तु पत्रिका ।
आसुर्या सम्पदाढ्याय पुंसे देया न कर्हिचित् ॥२१०॥

हमारी इस शिक्षापत्री को दैवी सम्पदा से युक्त हों ऐसे जनको देवें और जो मनुष्य आसुरी सम्पदा से युक्त हो उसे कभी न देवें ॥२१०॥

This SHIKSHĀPATRI shall be given to those who are endowed with spiritual virtues and shall never be given to those who endowed with evil qualities. ||210||

विक्रमार्कशकस्याब्दे नेत्राष्टवसुभूमिते ।
वसन्ताद्यदिने शिक्षापत्रीयं लिखिता शुभा ॥२११॥

संवत् १८८२ अठारसो ब्यासी के माघ शुक्ल पंचमी के दिन यह शिक्षापत्री हमने लिखी है । यह परम कल्याणकारिणी है ॥२११॥

This SHIKSHĀPATRI is written by Me on the Day of Vasant Panchmi (the fifth day of the bright half of the month of Mahā) of the year Vikram Samvat 1882 (Sunday, February 12, 1826 A.D.), and its source for ultimate salvation. ||211||

निजाश्रितानां सकलार्तिहन्ता
सधर्मभक्तेरवनं विधाता।
दाता सुखानां मनसेप्सितानां तनोतु
कृष्णोऽखिलमङ्गलं नः ॥२१२॥

अपने आश्रितभक्तजनों की समग्र पीडा का नाश करने वाले तथा धर्म सहित भक्ति की रक्षा करनेवाले और अपने भक्तजन को मनोवांछित सुख देनेवाले ऐसे श्रीकृष्ण भगवान हमारे समग्र मंगल का विस्तार करें ॥२१२॥

May Shri Krishna Bhagwān, the destroyer of all miseries of His devotees, the protector of *bhakti* with *dharma* and the bestower of all desired happiness to the devotee, enhance auspiciousness for us all. ||212||

Glossary

Āchamanam - A religious practice of drinking water from the concaved palm of the hand; liquid Prasad, in a religious ceremony.

Ahimsā - Non-violance.

Ambarish - A staunch devotee of God who worshiped God with unparalleled love and self dedication.

Āchārya - The head of the Sampraday.

Āshram - Traditionally in Hinduism, there are four stages of life (namely *Brahmcharya*, as a student and celibate; *Gruhasth*, as a householder with family; *Vānprasth*, as an elderly advisor, literally taking to forest as detached from worldly affairs; *Sanyās*, A complete renunciation ; surrendering oneself to the will of God), each with their corresponding duties and responsibilities.

Ātmanivedi - A devotee who has totally surrendered himself to God.

Āpaddharma -Religious codes of conduct as modified for practice in time of danger; things permitted by the scriptures in difficult times.

Āsan - seat; place for sitting

Bilva - A tree sacred to Lord Shiva, and its leaves

Brāhmin - A person belonging to the first of the four varnas or classes or Hindu society.

Brahmrup - "Form of *Brahm* (Second-highest of the five eternal entities, transcends everything except Parabrahm; The God)" possessing qualities similar to those of Brahm.

Brahmvettā - Knower of *brahm*

Chāturmās - Four month of the rainy season; according to Hindu calendar from

the day of Ashādh sud Ekādashi to Āsho vad Ekādashi.

Dandvat - Obeisance by lying prostrate on the ground.

Darshan - To see with reverence and devotion.

Dharm - Literally that which sustains or holds; faith or belief in the matter of morality, good behavior.

Dharmavanshi - Decendants of Dharmadev (Bhagwān Swāminārāyn's father).

Dwijas - literally twice-born; specifically used for Brāhmin.

Ekādashi - 11th day of the bright and dark halves of lunar month.

Ganapati - Son of Lord Shiv, Elephant headed Lord of auspiciousness.

Gāyatri Mantra - A Vedic *Mantra* of 24 syllables; name of a very sacred Vedic verse repeated every morning and evening during the *sandhyā* ceremony.

Gopichandan - A kind of yellowish earth used in making marks on forehead etc.

Grahasthas - A householder with family

Grihya Sutras - A work of aphorisms on householder's duties.

Gyān - Knowledge of one's ātma and the form and greatness of Paramātmā.

Jagannāthji - Form of Lord Shri Krishna, installed in Jagnnāthpuri.

Janmāshtami - A birthday celebration of Lord Shri Krishna; eight day of the dark half of the month of Shravan.

Jiva - That which is living, The embodied soul bound by Māyā and consequently undergoing the cycle of births and deaths.

Kanthi - A double-threaded necklace made of tulsi beads or other wood; usually adorned by satsangis.

Kasumbh - A rich cloth of safflower colour

Kshatriya - A person belonging to the second of the four *varnas* or classes or Hindu society.

Kumkum - Red powder – traditionaly made of turmeric and lime, used in applying as an auspicious mark

Mahādev - A name of Lord Shiv

Mahāpoojā - devoutly performing worship of God by offering various articles.

Mānsi - Mental worship, devoutly performing worship by offering various articles mentally exactly as one would physically.

Māyā - Illusion by virtue of which one considers the unreal universe as really

existent and as distinct from the supreme spirit.

Murtis - Sacred idol of God used to offer worship

Narāyan Kavacham - A sacred chapter recitation that gives protection from unwanted entities.

Nirgun - Not possessing any attributes of the three *gunas* – *sattva*, *raj*, and *tam*. Panchāmrit.

Pārvati - Goddess, literally the daughter of Parvat (Mount Himalay), wife of Shiv.

Poojā - worship.

Pranām - Obeisance offered to God or anyone.

Prāsad - consecrated food, offerings of God.

Pret shrāddh - An pious act performed for the propitiation, satisfaction or salvation of ancestors.

Purāna - Old, ancient poetical work giving accounts of gods and demigods.

Purascharan - Repetition of name of deity or particular *mantra* or *stotra*.

Purushārths - Four goals legitimately pursued by all Hindus, Namely: Dharma(Religious duties), Arth (Wealth), Kām (desires), Moksh (Ultimate liberation)

Purushottam - Supreme Being, Lord Swaminarayan,

Rādhā - A celebrated Gopi beloved to Lord Krishna.

Raj - Quality of passion

Rudrāksha - The seed like beads is sacred to Lord Shiv and is used in making rosaries.

Sadāchār - Good conduct; behavior as scriptures.

Sādhus - Saintly personalities.

Sadvidyā - good education

Sampradāya - A spiritual fellowship; religious sect

SandhyāVandan - An evening prayer of the Brāhmin

Sanskārs - Any of the sixteen purificatory or sacred religious rites or ceremonies produced by the scriptures.

Sanyāsini - A female ascetic

Sāshtang - lying prostration on the ground; literally offering obeisance with eight limbs.

Satsang - "Company of the true" The practice of spiritually associating with *Satpurush*.

Satsangis - Member of the satsang fellowship.

Satva - Quality of goodness

Shaligrām - A black round smooth piece of sacred stone worshipped by Vaishnavs as a symbol of Vishnu.

Shāstra - Scriptures

Shivrātri - night of the fourteenth day of the dark half of M*ā*gh sacred to Shiva.

Shreemad Bhāgwat - one of the eighteen Purāns (mythological works) The holy scripture that reveals diving pastimes of Lord Krishna.

Shrutis - Collection of divine revelations imparting philosophical and spiritual wisdom. The four Vedas are classified as Shrutis.

Shudras - Member of the fourth varna or class; 'Labourer' skilled worker traditionally serving the other three castes - *Brāhmin*, *Kshatriyas* and *Vaishyas*.

Smruti - 'The remembered' set of scriptures not considered to be revealed, in comparision to the Shruti scriptures.

Stotra - Hymns sung in praise of God.

Tam - Quality of darkness, ignorance.

Tilak - An auspicious mark that reveals identity of belongingness to a particular religious sect or sampradāy.

Tirths - The places of pilgrimage

Trigunātmikā - consists of three qualities of matter: satva, raja and tama

Tripundra - Three lined mark applied on forehead specially applied by the devotees of Lord Shiva

Tulsi - "Holy Basil"

Urdhvapundra - "U" shaped mark to be applied on forehead.

Vairāgya - Detachment, A persistent dislike for the world and worldly affairs.

Vaishnavas - Followers of Vishnu and his various incarnations

Vaishya - One of the four castes of the ancient Indian social system.

Varāh - The third avatar or incarnation Vishnu

Vrata - A practice of controlling mind and body; observance following with specific rules.

❖ ❖ ❖